सोलहकारण विधान

सोलहकारण विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद-ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें-आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय-आशीर्वाद - आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व - मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवहर्णम् - मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन - मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् - गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना- गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन-गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन-आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53
	सोलहकारण विधान	
15.	सोलहकारण भावना का स्तवन	54
16.	सोलहकारण समुच्चय विधान पूजा	55
17.	दर्शन विशुद्धि भावना पूजा	63
18.	विनयसम्पन्नता भावना पूजा	71
19.	शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा	75
20.	अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना पूजा	80
21.	संवेग भावना पूजा	86
22.	शक्तितस्त्याग भावना पूजा	91
23.	शक्तितस्तप भावना पूजा	95
24.	साधु समाधि भावना पूजा	100
25.	वैयावृत्य भावना पूजा	105
26.	अर्हद् भक्ति भावना पूजा	109
27.	आचार्य भक्ति भावना पूजा	114
28.	बहुश्रुत भक्ति भावना पूजा	122
29.	प्रवचन भक्ति भावना पूजा	129

final 14-11-2022

30.	आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा	135
31.	मार्ग प्रभावना भावना पूजा	140
32.	प्रवचन वात्सल्य भावना पूजा	145
33.	समुच्चय जयमाला	150
34.	प्रशस्ति	152
35.	विधान की आरती	153
36.	सोलहकारण चालीसा	155

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग-बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

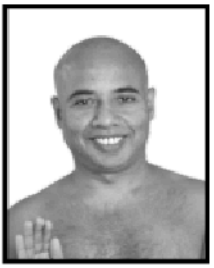

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी श्रृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108-108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार-चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक-एक सिंहासन और दो-दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी व ईशान इन्द्र-इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श-रस-गंध-वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े-बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर-सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

जैनधर्म में भावना का महत्त्व

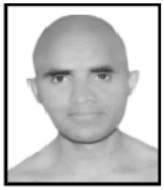

पाषाण से भगवान बना देती है भावना।
साधक को सिद्ध बना देती है साधना।।
पूजक से पूज्य बना देती है आराधना।
तथा पतित से पावन बनाते हैं 10 धर्म और 16 भावना।।

भावना शब्द का प्रयोग जैनागम में कई स्थान पर आता है। जैसे–बारह भावना, मेरी भावना, वैराग्य भावना, षोडशकारण भावना इत्यादि। भावना अर्थात् जीव के परिणाम, पुनः–पुनः चिंतन अथवा शुभ विचार। जगत के सम्पूर्ण प्राणी सुख की इच्छा करते हैं तथा दुःख से भयभीत रहते हैं। वह सुख भी दो प्रकार का है– एक इन्द्रिय सुख और दूसरा आत्मिक सुख। वह आत्मोत्थ सुख पर–पदार्थों से एवं पुण्योदय के बिना प्राप्त नहीं होता है बल्कि उससे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। अर्थात् आत्मिक सुख बाह्य पदार्थों से प्राप्त नहीं होता है बल्कि पर पदार्थों के त्याग से एवं अपने आत्मस्वरूप के चिंतन से प्राप्त होता है तथा उनमें भी षोडशकारण भावनाओं के चिंतन से सर्वोत्तम पुण्य के फलस्वरूप तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। संसार अवस्था में सर्वश्रेष्ठ पुण्यफल तीर्थंकर पद है। तीर्थंकरों की पूजा तीनों लोक के सभी इन्द्रगण करते हैं। सिद्धपद प्राप्त करना सहज साध्य है; परन्तु तीर्थंकर पद की प्राप्ति अतिशय रूप से दुर्लभातिदुर्लभ है। क्योंकि एक दुखमा–सुखमा काल में (अर्थात् चतुर्थ काल में) असंख्यात जीव मोक्ष तो जा सकते हैं परन्तु तीर्थंकर तो नियम से 24 ही होते हैं अधिक नहीं। तीर्थंकर पद प्राप्ति के लिए संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, कर्मभूमिज, सम्यग्दृष्टि मनुष्य होना आवश्यक है। इतना ही नहीं उस सम्यग्दृष्टि मनुष्य को केवली श्रुतकेवली के पादमूल में ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। इनमें से एक भी कारण न हो तो वह असंभव है। इतना ही नहीं यह सब कुछ प्राप्त हो जाने पर भी अगर षोडशकारण भावनाओं का पुनः–पुनः चिंतन नहीं किया जाये तो भी इन सब बाह्य सामग्री से कोई लाभ नहीं है। संक्षेप में इस तीर्थंकर पद की प्राप्ति का लाभ होना लाटरी के टिकिट के समान है। अर्थात् लॉटरी के लाखों, करोड़ों टिकिट खपते हैं परन्तु पुरस्कार सभी को नहीं मिलता है; किसी एकाध भाग्यवान को ही मिलता है वैसे ही यह षोडशकारण भावना भी तीर्थंकर पद की प्राप्ति के लिये लॉटरी के टिकिट के समान है।

यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस वर्तमान पंचमकाल में प्रत्यक्ष रूप से केवली श्रुतकेवलियों का सान्निध्य तो है ही नहीं तो फिर तीर्थंकर प्रकृति का बंध कैसे होगा ? और आगम का नियम है कि केवली श्रुतकेवली के पादमूल में ही इसका बंध होता है। केवली के पादमूल ही नहीं तो षोडशकारण भावना का चिंतन भी व्यर्थ है, क्या लाभ ? क्यों भावना भाना चाहिए ? इसका उत्तर है कि उत्तम भूमि में उत्तम बीज उचित समय पर बोने से अच्छी फसल आती है, ऐसा सारा

संसार जानता है। हमारे पास कर्मभूमि रूपी उत्तम भूमि है, मानव जीवनरूपी उत्तम खेत है, अणुव्रत महाव्रत धारण करने योग्य उत्तम समय भी है, सम्यक्त्वरूपी उत्तम बीज भी बोया है, षोडशकारण भावना रूपी उत्तम जल भी सींचा है। परन्तु बीज बोते ही फसल नहीं आती है, कालांतर से आती है, उसी प्रकार हमारे पास सब कुछ होने पर भी केवली श्रुतकेवली के सान्निध्यरूपी कालांतर के इंतजार की आवश्यकता है। जैसे बीज बोने के बाद जब तक फल नहीं आता है तब तक उस वृक्ष की रक्षा की आवश्यकता है, उसी प्रकार इस दुर्लभातिदुर्लभ मानव पर्यायरूपी वृक्ष की रक्षा की हमें अत्यन्त आवश्यकता है। किसी हिन्दी कवि ने भी कहा है कि 'जो बालपन से करोगे साधन तो काललब्धि को पाओगे तुम' जिस प्रकार सुवर्ण पाषाण से सुवर्ण की उपलब्धि के लिए उसे योग्य उपादान उक्तियों के द्वारा सोलह बार अग्नि में तपाना पड़ता है तब कही शुद्ध 100% सुवर्ण की प्राप्ति होती है। तो क्या 1 से 15 बार का तपाने का पुरुषार्थ व्यर्थ हो जायेगा ? नहीं। 1 से 15 बार में हर समय तपन के विशुद्धि बढ़ती जा रही थी, विशुद्धि बढ़ते-बढ़ते 16वें बार में पूर्ण रूप से विशुद्धि होने से शुद्ध सुवर्ण तत्त्व की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार हमारे आत्मा के ऊपर भी परिणामों के विशुद्धि के लिये पुनः-पुनः उच्च विचारों के संस्कार किये जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस काल में केवली श्रुतकेवलियों के न रहने पर भी उनकी प्राप्ति होने तक पुरुषार्थ जारी रखना चाहिए। क्योंकि कहा है-''आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य बनता है।''

इसी प्रकार धर्म ही समाज, देश, राष्ट्र व विश्व का आधार है। आचार्यों ने कहा है **'वत्थु सहावो धम्मो'** अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। अपने सही रूप को प्राप्त करने के लिए ही उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म जैनदर्शन में रखे गये हैं। इन दस धर्मों के पालन करने पर ही आत्मा परमात्मा पद को प्राप्त होता है।

सोलहकारण पर्व एवं दशलक्षण पर्व वर्ष में 3 बार आते हैं। वर्तमान युग में मानव यंत्र चालित होता जा रहा है, उसके पास समय की अल्पता होती है, हमारी कब से भावना थी कि ऐसी विधान की पुस्तक बने जिसमें श्रावक पर्व के दिनों में अल्प समय में अनुष्ठान/विधान करके पुण्यार्जन कर सके। बड़ौत वर्षायोग-2011 में हमने **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** के सामने भावना रखी थी। माताजी ने हमारी बात को एक बार में ही स्वीकार करते हुए पूज्य **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के आशीर्वाद से व सरस्वती की कृपा से अपने अथक परिश्रम द्वारा स्व-पर हितार्थ अपूर्व पुण्य बंध का कारण भूत एवं श्रावक तथा मुनिधर्म की सार्थकता के लिये **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर एवं रविव्रत विधान'** की रचना की है।

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को इस पुरुषार्थ से स्त्रीलिंग का छेदन हो और वे शीघ्र ही कर्मनाश कर मोक्षश्री प्राप्त करें, यही हमारा शुभाशीर्वाद है। साथ ही पुस्तक के द्रव्यदाता परिवार को भी आशीर्वाद।

-मुनि महिमासागर (शिष्य आचार्य वरदत्तसागरजी)

धर्म कर्म निवर्हणम्

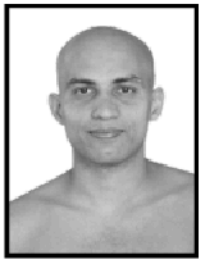

अनेकांत का प्रतिपादन करने वाले जैन दर्शन में 16 कारण भावनाओं व 10 धर्मों का विशेष महत्त्व है। 16 कारण भावनाएँ वे विशेष भावनाएँ हैं जो जीव को नर से परमेश्वर, कंकर से तीर्थंकर जैसी विशेष एवं महान् पुण्यशाली विभूति बना देती है। इसी प्रकार वस्तु का स्वभाव धर्म है। उत्तम क्षमा, मार्दव आदि 10 प्रकार के धर्म बताये हैं। तार्किक चूड़ामणि **श्री समन्तभद्र आचार्य** ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है–

देशयामि समीचीनं, धर्मं कर्म निवर्हणम्।
संसार दुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे॥2॥

जो संसार के दुःखी प्राणियों को संसार के दुःख से उठाकर उत्तम सुख में धरता है। अर्थात् मोक्ष दिला देता है वही धर्म है। ये उत्तम क्षमादि धर्म भी पालन करने वाले संसारी प्राणियों को उत्तम सुख दिला देते हैं।

सोलहकारण एवं दशलक्षण पर्व के दिनों में भव्य श्रावक विशेष रुचिपूर्वक व्रत–उपवास आदि के साथ 16 कारण एवं दशलक्षण विधान पूजन करते हैं।

मधुर कंठ की धनी **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपने काव्य कौशल का सदुपयोग करते हुये अपनी लेखनी द्वारा स्व–पर कल्याण की भावना से इस कृति का सृजन किया है। सभी धर्मात्मा श्रद्धालु भव्य जन इस विधान के माध्यम से जिनाराधना करके सातिशय पुण्यार्जन करें।

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी इसी प्रकार नित नयी रचनाओं का सृजन करें व अपने वात्सल्यमयी आचरण से तीर्थंकर जैसी विभूति व गुणों को प्राप्त करें, यही हमारी शुभकामना एवं शुभाशीर्वाद है।

साथ ही इस ग्रंथ के द्रव्यदाता, मुद्रक आदि सभी को आशीर्वाद..

–मुनि सुयशगुप्त

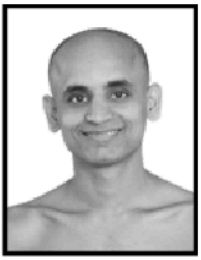

भादो भी होगा भक्ति का सावन

जिनबिम्बं जिनागारं जिनपूजां जिनस्तुतिं।
यः करोति जनस्तस्य न किंचिद् दुर्लभं भवेत्॥

जिस ग्रंथ को जैन रामायण के नाम से जाना जाता है। ऐसे **पद्मपुराण** नामक महाग्रंथ में **आचार्य श्री रविषेणजी** कहते हैं कि जो मनुष्य जिनबिम्ब (जिन प्रतिमा) जिनालय बनवाता है एवं जिनपूजा और जिनस्तुति करता है, उसे संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती है एवं जिनपूजा के रूप में ही यह **दशलक्षण एवं सोलहकारण विधान** भी इसी श्लोक की सार्थकता का स्वरूप है, क्योंकि जैन संस्कृति में चाहे व्रत के रूप में, चाहे पूजा के रूप में, चाहे विधान के रूप में, चाहे मुनि धर्म के रूप में, चाहे श्रावक धर्म के रूप में अथवा तीर्थंकर पद–दाता साधन के रूप में प्रत्येक रूप में दशलक्षण एवं सोलहकारण पर्व सर्वलोकमान्य हैं।

हमारे **दीक्षागुरु आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के आशीर्वाद एवं **मुनि श्री महिमासागरजी** की पावन प्रेरणा से **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री माताजी** ने इन सभी विधानों को बहुत ही सुन्दर काव्य–शैली से रचना के साँचे में संजोया है।

माताजी को बचपन से ही पूजा भक्ति रचना एवं गान कला के संस्कार हैं एवं **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के पावन सान्निध्य एवं **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** की छत्रछाँव ने उनकी इस कला को और भी निखारा है एवं मुझे तो जब मैं 14 साल का था तब से ही माताजी की इस प्रतिभा को जानने का अवसर मिला है। मुनि श्री महिमासागरजी को व्रत एवं उपवास के प्रति एक अनूठी रुचि एवं शक्ति है एवं उनकी प्रेरणा से माताजी ने इस विधान की जो रचना की है, सचमुच में ही ये रचना प्रत्येक जिनधर्मी के लिए धर्म एवं सौख्य वृद्धि का कारण बनेगी। माताजी की ये रचना भादो के मास को भी भक्ति का सावन बनने पर मजबूर करेगी एवं पर्यूषण पर्व में तो चार चाँद लगायेगी इसमें कुछ संशय ही नहीं है।

जिनागम सम्मत इस कृति के माध्यम से माताजी ने निश्चित ही अपने सम्यक्त्व को वर्धमान रूप दिया है। अतः इस विधान की रचना के फलस्वरूप वे इसी भव में स्त्रीलिंग का छेद कर अपनी साधना का शिखर प्राप्त करें तथा उनकी इस कवित्व शक्ति में वृद्धि हो एवं वे अपनी लेखनी के माध्यम से इसी प्रकार जिनशासन की प्रभावना करें। यही मेरी शुभकामना है।

–मुनि चन्द्रगुप्त

''स्व कथ्यम''

जैनागम में साध्य, साधक और साधना, भक्ति, भक्त और भगवान, आराध्य, आराधक और आराधना का विशेष वर्णन है। साध्य को प्राप्त करने की साधना में साधक अपने आराध्य से प्रभु से साध्य से उपास्य से प्रीत करता है, उनसे जुड़ना चाहता है। वह तर्क, वितर्क, ऊहा-पोह में पड़ना नहीं चाहता। वह सिर्फ अपने इष्ट की प्रार्थना, भक्ति, पूजा करके उनसे अपना परिचय बढ़ाता है। उनके गुण गाता है, गुनगुनाता है, कुछ चढ़ाता है, कुछ माँगता है, कुछ सजाता है, नृत्य रचाता है, संगीत बजाता है और प्रभु को अपने पास बुलाने का उपक्रम जुटाकर वह आनंद के क्षण पाना चाहता है। शांति की सस्ति में अवगाहन करता है। सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत पाता है। विचारों को परिशुद्ध बनाता है और अनादिकालीन कर्मों से कलंकित आत्मरूपी मैली चदरिया को उजली बनाता है। श्रद्धा, आस्था की अविरल धारा से हृदय की कलुषता को धोते-धोते सातिशय पुण्य की गागर भरता है और फिर वह सोलहकारण भावना भाता है। विधिवत् उपासना से तीर्थंकर प्रकृति का बंध करके संसार का सर्वोत्तम पद, सर्वोत्तम सुख प्राप्त कर भव-बन्धन से मुक्ति पाता है। दशलक्षण धर्म भी भरत व ऐरावत क्षेत्रों में पर्यूषण पर्व की शृंखला में उत्सवपूर्वक मनाया जाता है जिसमें साधक, भक्त, उपवास, विधान, यात्रा, रथ आदि कई प्रकार से मनाते हैं। दश धर्म आचार्यों के मूलगुणों में भी आते हैं, अतः दश धर्म भी साध्य प्राप्ति में सहायक बनते हैं। इसी शृंखला में **'गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी'** ने दशलक्षण व सोलहकारण आदि अनेकों विधान लिखे हैं, यह उनका पुरुषार्थ उनकी आत्मा को पवित्र बनाये व विधानकर्त्ता भी इन कृतियों से पुण्य प्राप्त करें।

यही शुभ भावना व कामना सहित-

-गणिनी आर्यिका क्षमाश्री

तीर्थंकर पद की हेतू सोलहकारण भावना

दोहा–जिनवाणी जिनधर्म के, शाश्वत है ये धर्म।
सोलहकारण भाव से, नाशे सारे कर्म।।

जैनधर्म कितना सूक्ष्म है जिसमें हर एक वस्तु का वर्णन आचार्यों ने सोच विचार कर किया है। जीव कैसा कर्म करता है तो उसका उसे क्या फल मिलता है। यह जानकारी आगम में मिलती है। पाप करने की भी सजा मिलती है तो पुण्य कस्ने वाले को वरदान, चाहे व्यक्ति छुपकर ही पाप क्यों न करे परन्तु कर्म उसे नहीं छोड़ते। पाप भी व्यक्ति छुपकर करता है तो विशेष पुण्य भी अकेले में परमात्मा का चिंतवन करके संचय करता है। कोई कहते हैं कि पुण्य मत करो, पुण्य करने से स्वर्ग की प्राप्ति होगी। पुण्य हेय है, पुण्य सोने की बेड़ी, तो पाप लोहे की बेड़ी है। यदि हम विचार करें तो कोई भी व्यक्ति 24 घंटे पाप नहीं करेगा और ना ही पुण्य करेगा। पुण्य–पाप उसके भावों पर आधारित है; क्योंकि जीव के तीन उपयोग होते हैं। शुभ, अशुभ, शुद्ध, जीव अशुभ उपयोग में अधिक समय रहता है। शुभ में थोड़े समय और शुद्धोपयोग को पाने के लिये शुभ उपयोग ही कारण बनता है। जब पुण्य का कार्य होता है तब यह जीव दान, पूजा आदि शुभ उपयोग में थोड़ी देर के लिये मन स्थिर कर पाता है। क्योंकि मन बड़ा चंचल है, उसको वश में करना बड़ा मुश्किल है। जो अपने मन को प्रभु की भक्ति में लगा लेता है वही पुण्य का बंध कर पाता है। इसलिये आचार्यों ने कहा है–पुण्य करने से चाहे स्वर्ग ही क्यों न मिले परन्तु वही पुण्य आगे अरहंत सिद्ध बना देता है।

कुंदकुंद आचार्य ने कहा है–**''पुण्ण फला अरहंता''**।

पुण्य का उत्कृष्ट फल है अरहंत पद मिलना, उसमें भी तीर्थंकर पद सातिशय पुण्य प्रकृति है।

ऐसे सातिशय पुण्य का कौन संचय करते हैं ? जो पूर्व पर्याय में इन 16 कारण भावनाओं को भाते हैं, चिंतवन करते हैं। जितने भी व्रत विधि से करते हैं तो उनका फल अरहंत सिद्ध पद की प्राप्ति में कारण हो सकता है। दशलक्षण, पंचमेरु आदि व्रत का चिंतवन करने से तीर्थंकर पद नहीं मिलता, सिद्ध तो बन

सकते हैं परन्तु सोलहकारण भावना ही ऐसा व्रत है जिसका चिंतवन करने से, भाने से तीर्थंकर जैसे सर्वोत्कृष्ट पद की प्राप्ति होती है। केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में बैठकर भव्य जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध करते हैं। 11 अंग 14 पूर्व के पाठी बनते हैं। उनके मन में प्राणीमात्र के प्रति करुणा, दया, वात्सल्य के भाव तीव्र रूप में उमड़ते हैं। कल्याण के भाव आते हैं। तीर्थंकर बनने वाले मुनिराज चिंतवन करते हैं। वे भावना भाते हैं कि मैं कैसे प्राणीमात्र का कल्याण करूँ, उद्धार करूँ, उन्हें सुख-शांति का मार्ग दिखाऊँ। ऐसी भावना सोलहकारण भाने वाले किसी विरले भव्यात्मा महापुरुषों की होती है। इन्हीं भावना से तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। इसलिये भगवान के पाँचों कल्याणक के नाम के पीछे 'कल्याण' शब्द लगा है। कल्याणक का बड़ा महत्त्व है। सोलहकारण भावना चिंतवन करने वाले ही पंचकल्याणक को प्राप्त कर सकते हैं।

ये सोलहकारण व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है। इन सोलहकारण भावना का व्रत कभी भी कोई भी व्यक्ति व्रत कर सकता है। चार कन्याओं ने सोलहकारण व्रत किया और व्रत के कारण चारों कन्याओं ने उत्तम सुख को प्राप्त किया।

चारों ने स्त्री पर्याय को छेदकर मनुष्य बनकर मुनिव्रत धारण किया और एक कन्या के जीव ने सीमन्धर तीर्थंकर का पद प्राप्त किया।

आगम में बताया है- **एक-एक भावना को भाकर भी जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर सकते हैं।** ऐसा हरिवंश पुराण में (पृष्ठ संख्या 446, गाथा नं. 149) जिनसेन आचार्य ने कहा है-

तीर्थंकर नाम कर्मणि षोड़श तत्कारणान्यमून्यनिशम्।
व्यस्तानि समस्तानि च भवन्ति सद्भाव्य मानानि॥149॥

अर्थ-सत्पुरुषों के द्वारा निरन्तर चिंतवन की हुई उक्त सोलह भावनाएँ पृथक्-पृथक् अथवा समुदाय रूप से तीर्थंकर नामकर्म के बंध की कारण हैं।

यह व्रत दिनकर की तरह हमारे जीवन में रोशनी फैलाये अंधकार को दूर करे, ज्ञान की किरण प्रस्फुटित करे, फूलों की तरह महकाने में कारण बने। यह सोलहकारण भावना व सोलहकारण व्रत तीर्थंकर जैसी महापदवी दिलाती है। ऐसे भूत, वर्तमान और भविष्यकाल के सभी तीर्थंकर भगवंतों को बारम्बार

नमन, वंदन। क्योंकि इनके पादमूल में बैठकर व केवली श्रुतकेवली की शरण में यह तीर्थंकर प्रकृति बंधती है। संसार में, तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ पद तीर्थंकर भगवान का है इसलिये अरहंत सिद्ध तो अनंतानंत बन जाते हैं परन्तु हर काल में तीर्थंकर 24 ही होते हैं। ऐसी तीर्थंकर प्रकृति में कारण है, सोलहकारण भावना उन भावना को भाव भक्ति, श्रद्धापूर्वक बारम्बार नमन..

यह विधान संस्कृत में **'अभयनंदि आचार्य'** के द्वारा लिखा गया है। हिन्दी में ईधु कवि ने इसकी रचना की है। इसी विधान में जो भावनाओं के भेद रूप अर्घ बनाये हैं, वो भेद ही मंत्ररूप में लिखे हैं। अभयनंदि आचार्य को भी त्रय भक्तिपूर्वक नमोस्तु।

चौबीस तीर्थंकर भगवान को नमोस्तु। देवाधिदेव शांतिनाथ भगवान को नमोस्तु, गणधर भगवान को नमोस्तु। **दीक्षादाता गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** त्रयभक्तिपूर्वक नमोस्तु। **शिक्षादाता वैज्ञानिक आचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव** को नमोस्तु।

इन दोनों विधानों का संपादन करने वाले **कविहृदय प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक कोटि-कोटि नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु। आचार्यश्री ने बहुत सुन्दर ढंग से इन दोनों विधानों का संपादन किया है। आचार्यश्री के लिये लिखने को मेरे पास शब्द नहीं और बोलने के लिये वाक्य नहीं। उनकी महानता हर दस धर्म में हर सोलह भावना में झलक रही है। उनको जो छंद संबंधी ज्ञान है वह बड़ा अनूठा है, अलौकिक है। एक भी मात्रा कम ज्यादा होने पर वे उसको तुरन्त ही सुधारते हैं। छंद पढ़ते ही पता लगा लेते हैं कि मात्रा अधिक है या कम है। यही कवि की सबसे बड़ी विशेषता है। यह विशेषता आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव के अंदर कूट-कूट कर भरी है। अपने कविहृदय विशेषण को गुरुदेव ने सार्थक कर दिया। ऐसे गुरुवर को बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु..। मेरा बड़ा सौभाग्य है जो उनकी छत्र छाया में यह विधान **मुनिश्री महिमासागरजी** की प्रेरणा व गुरुदेव के आशीर्वाद से लिखने का शुभ अवसर मिला।

इस सोलहकारण विधान का प्रारम्भ वीर निर्वाण संवत् 2537, विक्रम संवत् 2068 भाद्रपद कृष्णा तीज मंगलवार, दिनांक 16-8-2011 को बड़ौत

में हुआ तथा इसी वर्षायोग में कार्तिक कृष्णा दशमी शनिवार, दिनांक 5-11-2011 को यह विधान सम्पूर्ण हुआ। गुरु कृपा से मात्र 39 दिन में इस विधान की रचना पूर्ण हो गयी।

मुझे धर्म के मार्ग में लगाने वाली परम पूज्य **आर्यिका विशालमति माताजी** को भी बारम्बार वंदामि करती हूँ। उनके आशीर्वाद से ही यहाँ तक पहुँची हूँ। हमेशा उनका आशीष मिलता रहे, यही कामना करती हूँ।

श्री सोलहकारण विधान का मांडला

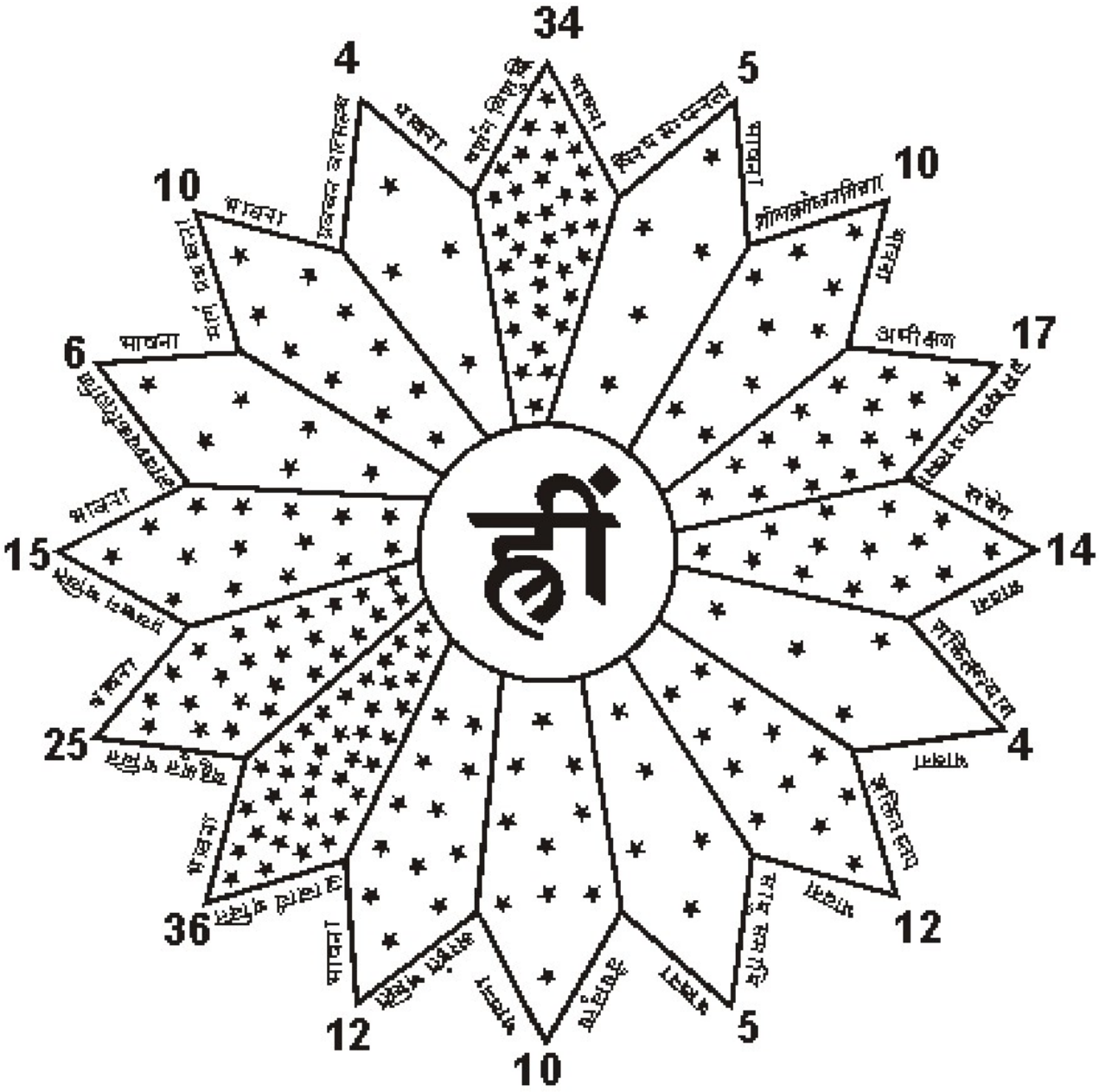

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणोंमें।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दुःख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सोलहकारण स्तवम्

(चाल–नरेन्द्रं फणेन्द्रं...)

देवाधिदेवं जय हो जिनेशं, हे वीतरागी सिद्धं जिनेशं।
तवपाद युगलं प्रणमामि नित्यं, भूतं भविष्यं जिनराज वंद्यम्।।

दर्शन विशुद्धिं विनय स्वभावं, शीलव्रतेषु सुआत्मभावम्।
अभीक्ष्ण ज्ञानं संवेग धारं, तप त्याग धारं स्वात्मनिखारं।।

साधु समाधि सिद्धि प्रदानं, गुरु वैयावृत्ति आरोग्यकायम्।
अर्हंत भक्ति दुःख शोक नाशं, आचार्य भक्ति वृत्तं विकासम्।।

बहुश्रुत वंद्यं पाठक नमामि, तव पाद युगलं नित्यं भजामि।
अर्हंत वाक्यं सत्य प्रकाशं, जिनमार्ग रूपं धर्म प्रभावम्।।

जयवन्त धर्मं सर्वत्र पूज्यं, जिनधर्म विश्वं त्रिलोक पूज्यम्।
कर्त्तव्य कर्त्तुं प्रमाद त्याज्यं, दानादि पूज्यं जिनराज आद्यम्।।

वात्सल्य रूपं भगवत स्वरूपं, वंद्येभिवंद्यं निजात्म रूपम्।
षोडश गुणानं सुकण्ठ धारं, सिद्धि प्रदानं सुमुक्ति द्वारम्।।

दोहा– षोडशकारण व्रत धरे, 'आस्था' भक्ति समेत।
व्रत के संग गुप्ति वरें, पायें मुक्ति निकेत।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सोलहकारण समुच्चय विधान पूजा

(गीता छंद)

दर्शन विशुद्धि आदि सोलह, भावना को भाइये।
चिन्तन मनन और ध्यान से, उत्कृष्ट पदवी पाइये।।
भायें जो सोलह भावना, वो भव्य तीर्थंकर बने।
उनका करें आह्वान हम, सुर नर जिन्हें नित ही नमें।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारण भावना समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

(तर्ज - नंदीश्वर पूजा की चाल...)

मन में आनंद अपार, प्रभु की भक्ति करें।
जल लाये प्रभु के द्वार, प्रभु का न्हवन करें।।
सोलहकारण गुण खान, जो भविजन भायें।
उनका हम करें विधान, प्रभु सम गुण पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्त्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचन वात्सल्य इति षोडश कारणेभ्यो: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम केशर कर्पूर, चंदन घिसवाये।
जिनपद में नित्य लगाय, आतप नश जाये।। सोलहकारण....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का मन भावन रूप, भव्यों को भायें।
हम पाने अक्षय रूप, अक्षत ले आये।। सोलहकारण....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद पद्म कचनार, पुष्प सजा लायें।
अर्पित जिनपद में हार, मन्मथ विनशायें।।
सोलहकारण गुण खान, जो भविजन भायें।
उनका हम करें विधान, प्रभु सम गुण पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्षु और मन को भाय, घृत पय के व्यंजन।
जिनवर को आज चढ़ाय, हरने भव बंधन।। सोलहकारण....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदा सी दीपक ज्योत, प्रभु दर पे चमके।
पायें हम ज्ञानोद्योत, निज आतम दमके।। सोलहकारण....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागुरु धूप सुवास, नभ में जब फैले।
कर्मों का करने नाश, हम जिन शरणा लें।। सोलहकारण....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिभुवन में तिलक समान, तीर्थंकर पदवी।
पाने फल सिद्ध समान, हमने भक्ति रची।। सोलहकारण....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरादिक द्रव्य चढ़ाय, सुन्दर थाली में।
अष्टम भूमि मिल जाय, त्रिभुवन स्वामी से।। सोलहकारण....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण भावना पूजाओं के पूर्णार्घ

(अडिल्ल छंद)

भावों को उज्ज्वल करती ये भावना।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना।।

दर्श विशुद्धि को भावों से ध्या रहे।
जिन चरणों में पूरण अर्घ चढ़ा रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

विनय मोक्ष का द्वार बताया शास्त्र में।
विनय करें हम देव गुरु का साथ में।।
विनय भाव के भेद प्रभुवर ने कहे।
विनय भाव से अर्घ समर्पण कर रहे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विनय सम्पन्नता भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

शील भावना आत्म भावना, स्व स्वभाव दिखलाती।
परद्रव्यों से मुक्त कराकर, परम ब्रह्म बनवाती।।
क्रोधादिक से रहित भाव ही, शील भाव कहलाये।
सर्व पाप का मोचन करने, उत्तम भक्ति रचायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर अर्हंत केवली, ज्ञानमयी निज को जाने।
श्रमण लगें नित ज्ञान ध्यान में, हम आये उनको ध्याने।।
ज्ञानमयी उपयोगवान ही, शुद्ध बुद्ध बन जाये।
उनको ध्या हम प्रभु चरणों में, मंगल द्रव्य चढ़ायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

धर संवेग विचार, मोह त्याग घर छोड़ें।
भाव विराग जगाय, ममता से मुख मोड़ें।।

यह संसार असार, जिनवर हमें बताते।
लेकर आठों द्रव्य, उनको अर्घ चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

त्याग भावना भाय, बनते जो वैरागी।
छोड़ चले संसार, प्रभुवर के अनुरागी।।
भक्ति भाव के साथ, पूरण अर्घ चढ़ायें।
त्याग भावना भाय, तीर्थंकर बन जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

तप का तीव्र प्रभाव, कर्म समूह जलाता।
तप में तप कर जीव, सिद्ध रूप पा जाता।।
महातपस्वी संत, उनकी भक्ति रचायें।
तन तपमय बन जाय, ये ही भाव जगायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

साधु करें समाधि, अष्टम वसुधा पाने।
सात आठ भवधार, निश्चय मुक्ति ठाने।।
उन मुनियों को आज, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
उन सम हम भी आज, यही भावना भायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

द्वादश तप में वैयावृत्ति, आभ्यन्तर तप कहलाता है।
वैय्यावृत्ति जो नित करता, वो तीर्थंकर बन जाता है।।

निर्ग्रन्थ श्रेष्ठ सब श्रमणों की, सेवा जिनने है सिखलायी।
वसुविधी द्रव्यों की थाल चढ़ा, हमने प्रभु की महिमा गायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

णवकार मंत्र में पहला पद, अरहंत प्रभु का आता है।
अरिहंत प्रभु के सुमिरन से, सब दुःख संकट कट जाता है।।
अरहंत भावना कहती है, अरिहंत प्रभु का जाप करो।
अरिहंत देव के चरणों में, सब पूजन पाठ विधान करो।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य भक्ति भावना को अर्घ चढ़ायें।
उनके चरण में बैठ अपना भाग्य जगायें।।
सन्मार्ग दिवाकर गुरु आचार्य हमारे।
हम झूम-झूम भक्ति करें उनको पुकारें।।11।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

बहुश्रुत धनी मुनीश का सम्मान हम करें।
पाठक ऋषि की भक्ति से सद्ज्ञान हम वरें।।
इस भावना को भायें ज्ञान ज्योति जलायें।
सुज्ञान रत्न पाने अष्ट द्रव्य चढ़ायें।।12।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

बारह सभा के मध्य खिरे जिन की देशना।
जिनके चरण में राग द्वेष होवे लेश ना।।

सत्यार्थ वाणी लोक में जिनवर की गूँजती।
जिनवाणी को ही सर्व सभा नित्य पूजती।।13।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

षट् आवश्यक जो नित पाले, मोक्ष मार्ग के वे रखवाले।
आवश्यक हम अवश करेंगे, समता धर शिव राह वरेंगे।।
कभी प्रमादी नहीं बनेंगे, दोषों का परिहार करेंगे।
प्रभु अर्चा हम सदा करेंगे, भक्ति से भगवान बनेंगे।।14।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मार्ग प्रभावना मार्ग दिखाये, धर्म किरण घर-घर पहुँचाये।
अंग आठवाँ यह कहलाये, सर्व जगत् में जिन मत छाये।।
जिनशासन जिनगुरु को ध्यावें, यशकीर्ति रवि सम फैलावें।
प्रभु को उत्तम द्रव्य चढ़ायें, पाप नशे बहु पुण्य कमायें।।15।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

वात्सल्य प्रवचन भावना, वात्सल्य गुण सिखला रही।
करुणा दया मन में धरो, माँ शारदा बतला रही।।
उसको विनय उत्साह से, पूर्णार्घ अर्पण कर रहे।
हम भी प्रभु तुम सम बने, यह प्रार्थना नित कर रहे।।16।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिस भू पे जिनवर चले, वहाँ शांति सुख छाय।
ऐसे प्रभु के चरण तल, शांतिधार कराय।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– प्रभु की छवि के सामने, भाग्य पुष्प खिल जाय।
पुष्प चढ़ा प्रभु आपको, मन हर्षित हो जाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सोलह कारण पर्व की, जयमाला सुखकार।
गायें हम सब भक्ति से, पायें सौख्य अपार।।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर पद देने वाले, सोलह कारण की जय हो।
जो भाये सोलह कारण को, उन मुनिराजों की जय हो।।
हम पूजें उन मुनिराजों को, जो तीर्थंकर बनते हैं।
उनके पावन चरण-कमल में, सुर-नर-किन्नर नमते हैं।।1।।

पूर्व जन्म में पुण्य उदय से, जिन जीवों का भाग्य जगे।
उनके हृदय कमल में देखो, प्राणी मात्र से प्रेम जगे।।
करना है कल्याण सभी का, यही भावना नित्य करें।
मोक्षमार्ग का पथ दिखलाने, स्वयं दिगम्बर वेश धरें।।2।।

उन्हें मिले जब केवलज्ञानी, या श्रुतकेवली मिल जाते।
तीर्थंकर प्रकृति पद दायक, दिव्य भावना वे भाते।।
करें समाधि देव बने वो, पुनः मनुज भव में आते।
अंतिम उत्तम जन्म धरें वो, तीन लोक को हर्षाते।।3।।

सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचना करते नगरी की।
पन्द्रह मास रत्न वर्षा से, पूज्य बने यह धरती भी।।

गर्भ पूर्व तीर्थंकर माता, शुभ सोलह स्वप्ने देखे।
जन्म समय में इन्द्र नाथ को, नेत्र हजार बना देखे।।4।।

सूर्य आप हैं चन्द्र आप हैं, तीन जगत् के हो स्वामी।
हमको भी प्रभु राह दिखाओ, आओ प्रभु अन्तर्यामी।।
गर्भ कल्याणक मंगलकारी, मात-पिता पूजे जाते।
जग जननी माँ के चरणों में, देव-देवियाँ झुक जाते।।5।।

जन्म कल्याणक की शुभ बेला, सुरपति प्रभु का न्हवन करे।
नश्वर वैभव तजकर जिनवर, दीक्षा लेकर ध्यान धरें।।
चार घातिया कर्म नशाके, केवलज्ञानी कहलाये।
द्वादश धर्म सभा में जिनके, मनुज देव और पशु आये।।6।।

कर्म अघाति नाशें भगवन्, शिवरानी का वरण करें।
भविजन दीप जला ले लड्डू, झूम-झूम कर भक्ति करें।।
पंच कल्याणक सदा मनायें, पंचम गति को प्राप्त करें।
बोधि समाधि गुप्ति त्रयधर, 'आस्था' से शिव राह वरें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि आदि षोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सोलह कारण भावना, भव्यजीव ही भाय।**
सर्व कर्म को नाशके, तीर्थंकर बन जाय।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

(जोगीरासा छंद)

प्रथम भावना दर्श विशुद्धि, सम्यक् दर्शन देती।
जो भवि प्राणी इसको भावे, भव-भव दुःख हर लेती।।
ऐसी शुद्ध भावना पाने, प्रभु की अर्चा करता।
गुण थापन आह्वान करूँ मैं, प्रभुवर के गुण वरता।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

कंचन झारी निर्मल जल से, पत्र युक्त भरकर लाया।
रत्नत्रय निधि पाऊँ भगवन्, जन्म-जरा हरने आया।।
तीर्थंकर पद देने वाली, दर्श विशुद्धि को भाऊँ।
तीर्थंकर प्रभु के चरणों में, आनंदामृत पा जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध युक्त चंदन का लेपन, भव संताप मिटाता है।
ऐसी प्रभु रज शीश लगा भवि, अपना भाग्य जगाता है।। तीर्थंकर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमुक्ता धवलाक्षत प्यारे, शालि सुगंधित अक्षत ये।
अक्षत पुंज चढ़ाकर भगवन्, पाऊँगा अक्षय पद मैं।। तीर्थंकर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जूही चंपा कमल केवड़ा, चढ़ा रहा प्रभु चरणों में।
भाग्यवान बनने को भगवन्, आया तेरे चरणों में।। तीर्थंकर..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मनहर षट्रस व्यंजन, प्रभु को नित्य चढ़ाता हूँ।
क्षुधा कर्म को दूर भगाने, प्रभु चरणों में आता हूँ।। तीर्थंकर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी दीपों की थाली, मोह-तिमिर का नाश करे।
प्रभु की आरती करने वाला, सम्यक्ज्ञान प्रकाश वरे।।
तीर्थंकर पद देने वाली, दर्श विशुद्धि को भाऊँ।
तीर्थंकर प्रभु के चरणों में, आनंदामृत पा जाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म जग में भटकाते, सदा रुलाते भव-भव में।
धूप चढ़ाऊँ तुमको भगवन्, पार करो इस भव वन से।। तीर्थंकर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर रसदार फलों से, जो श्रावक पूजा करता।
द्रव्य भाव से जिनगुण गाये, वो ही मुक्ति रमा वरता।। तीर्थंकर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक् पुष्पाक्षत ले, दीप धूप फल चरू महा।
अर्घ बनाकर भक्ति रचाकर, प्रभु चरणों को पूज रहा।। तीर्थंकर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अंजन जैसे चोर ने, धरा निशंकित अंग।
हम इसकी पूजा करे, मन में धरें उमंग।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निशंकित गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग निकांक्षित जो धरे, हैं अनंतमति नाम।
वैसे हम इसको वरें, पाने मुक्ति धाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री निकांक्षित गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्दायन नृप ने धरा, निर्विचिकित्सा अंग।
इसको पूजें हम सदा, पाने प्रभु का संग॥3॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विचिकित्सा गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रानी रेवती धारकर, अमूढ़ दृष्टि अंग।
हो प्रसिद्ध इस लोक में, पाया प्रभु का संग॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अमूढ़दृष्टि गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपगूहन इस अंग में, जिनेन्द्र भक्त प्रसिद्ध।
इसकी अर्चा हम करें, बनने प्रभु सम सिद्ध॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उपगूहन गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग स्थितिकरण में, वारिषेण मुनिराज।
सिद्ध हुये इस लोक में, पाया मोक्ष स्वराज॥6॥

ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरण गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल अंग में सिद्ध हैं, विष्णु कुँवर मुनिराय।
हम इसकी अर्चा करें, उर वात्सल्य बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्य गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

की प्रभावना धर्म की, वज्रकुंवर मुनिराज।
उसकी अर्चा हम करें, पाने सुख साम्राज॥8॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभावना गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ मद निवारण के अर्घ (दोहा)

करें कभी ना ज्ञान मद, ये मद ज्ञान घटाय।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति ही, सम्यक दीप जलाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजामद अपना तजें, तजें ख्याति मद भाव।
जिनगुण पाने हम चले, भक्ति के ले भाव॥10॥

ॐ ह्रीं श्री पूजामद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलमद का अभिमान तज, करें प्रभु से राग।
जिनवर का अनुराग ही, हरे हमारा राग।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कुलमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिमद को हम तजें, छोड़ें सब अभिमान।
पूजा कर प्रभु आपकी, नाशें मिथ्याज्ञान।।12।।

ॐ ह्रीं श्री जातिमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलमद जिस नर ने तजा, पाये शक्ति अतुल्य।
हम जिनकी पूजा करें, पाने भक्ति अतुल्य।।13।।

ॐ ह्रीं श्री बलमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि मद ऋद्धि हरे, दे ना केवलज्ञान।
ऋद्धिधर प्रभु को भजें, दो प्रभु केवलज्ञान।।14।।

ॐ ह्रीं श्री ऋद्धिमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपमद से शक्ति घटे, फिर ना हो उपवास।
जिन अर्चा से शक्ति पा, करें मास उपवास।।15।।

ॐ ह्रीं श्री तपमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें रूपमद काय का, तन मिट्टी बन जाय।
प्रभुवर के गुणगान से, प्रभु सम मिलती काय।।16।।

ॐ ह्रीं श्री वपुमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंकादि दोष निवारण के अर्घ (चौपाई)

देव शास्त्र गुरुवर की वाणी, शंका छोड़ बनो श्रद्धानी।
श्री जिनवर को हम सब ध्यायें, शंका दोष रहित बन जायें।।17।।

ॐ ह्रीं श्री शंकादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागे सांसारिक इच्छायें, कांक्षा रहित धर्म अपनायें।
दर्श विशुद्धि भाव बढ़ायें, हम प्रभुवर को अर्घ चढ़ायें।।18।।

ॐ ह्रीं श्री कांक्षादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मीजन से प्रीत बढ़ायें, ग्लानि भाव कभी ना लायें।
विचिकित्सा के भाव नशायें, हम जिनवर को नित उठ ध्यायें॥19॥

ॐ ह्रीं श्री विचिकित्सा दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूढ़दृष्टि यह दोष हटाये, अपनी सम्यक् दृष्टि बनायें।
तीन मूढ़ता अवश नशायें, हम जिनवर को अर्घ चढ़ायें॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मूढ़दृष्टि दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनूपगूहन दोष विनाशे, स्वगुण ढ़ाँक स्वदोष प्रकाशे।
जिनभक्ति रच हम शिव पायें, जिनगुणसंपत् प्रभु से पायें॥21॥

ॐ ह्रीं श्री परदोषभाषण (अनूपगूहन) दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थितिकरण दोष दुःखदाई, रहे धरम में स्थित भाई।
गिरते को हम और उठाये, इसी भाव से अर्घ चढ़ायें॥22॥

ॐ ह्रीं श्री अस्थितिकरण दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवात्सल्य दोष विनशाये, प्रेम भाव के दीप जलायें।
हर प्राणी से प्रेम हमारा, स्वीकारों प्रभु अर्घ हमारा॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अवात्सल्य दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रभावना हमसे ना हो, जैनधर्म बिन ना जीना हो।
जैनधर्म जन-जन अपनायें, हे प्रभु ! हम सब अर्घ चढ़ायें॥24॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रभावना दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छः अनायतन त्याग के अर्घ (चौपाई)

ना कुदेव की करे प्रशंसा, अरहंतों की करें प्रशंसा।
षट् अनायतन दूषण त्यागें, जिन भक्ति में भविजन लागे॥25॥

ॐ ह्रीं श्री कुदेव प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुदेव के भक्त कहाये, उनकी गुण गाथा ना गाये।
षट् अनायतन दूषण त्यागे, जिन भक्ति में भविजन लागे।।26।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेव भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म छोड़ कुधर्म जो धारे, पाते वो दुःख संकट सारे।। षट्...।।27।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्म सेव प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूर रहे कुधर्मी जन से, संग करें ना मन-वच-तन से।। षट्...।।28।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्म भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरुओं को हम ना मानें, सद्गुरुओं को हम पहचानें।। षट्...।।29।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरु प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरु सेवक हमें फंसाये, इनकी सेवा भ्रमण बढ़ाये।। षट्...।।30।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरु भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन मूढ़ता त्याग के अर्घ

(चौपाई)

वीतराग जिनदेव हमारे, पूजन करते भविजन सारे।
देवमूढ़ता हम सब छोड़ें प्रभुवर तुमसे नाता जोड़ें।।31।।

ॐ ह्रीं श्री देवमूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म सच्चा कहलाये, इसी धर्म को अर्घ चढ़ायें।
धर्म मूढ़ता हम सब छोड़ें, जैन धर्म से नाता जोड़ें।।32।।

ॐ ह्रीं श्री धर्ममूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जिनने वेश दिगम्बर धारा, पूजें उन गुरु को जग सारा।
गुरु मूढ़ता हम सब छोड़ें, जिन गुरुओं से नाता जोड़ें।।33।।

ॐ ह्रीं श्री गुरुमूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

भावों को उज्ज्वल करती ये भावना।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना।।
दर्श विशुद्धि को भावों से ध्या रहे।
जिन चरणों में पूरण अर्घ चढ़ा रहे।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जल से शांतिधार कर, जोड़ूँ दोनों हाथ।**
नाना रंगों के सुमन, अर्पित करता नाथ।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– **दर्श विशुद्धि भावना, मुक्ति की सोपान।**
उसकी जयमाला पढ़ें, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

दर्श विशुद्धि मन की शुद्धि, पा जाये हम सम्यक् बुद्धि।
त्याग करें पच्चिस दोषों का, शंकादि वसु पाप मलों का।।1।।

शंका छोड़ निशंक बनेंगे, श्रद्धा प्रभु पे सदा करेंगे।
अंग निकांक्षित उर में धारें, त्यागें कांक्षा प्रभु के द्वारे।।2।।

निर्विचिकित्सा अंग निराला, ग्लानि दूर कराने वाला।
तीन मूढ़ता को पहिचानें, सच्चे तत्त्वों को हम जानें।।3।।

अपने सद्गुण को हम ढ़ांकें, वा पर के अवगुण को ढ़ांकें।
गिरते को हम सदा उठाये, धर्मी जन का धर्म बचाये।।4।।

श्रेष्ठ धर्म वात्सल्य निभायें, गौ बछड़े सम प्रेम दिखायें।
आठों अंग सदा हम धारें, स्वयं तिरें औरों को तारें।।5।।

अप्रभावना कभी न होवे, जैनधर्म की जय नित होवे।
जैनधर्म का यश फैलायें, गुण प्रभावना जग में छायें।।6।।

आठ दोष का त्याग करेंगे, आठ गुणों को ग्रहण करेंगे।
गुण संवेग प्रशम को पायें, अनुकम्पा आस्तिक्य जगायें।।7।।

तीर्थंकर पद जो भी पाये, निश्चय दर्श विशुद्धि भाये।
चौबीस जिनवर जो भी बनते, यही भावना भाकर बनते।।8।।

मानतुंग जिन भक्ति रचाये, कारागृह से मुक्ति पाये।
वादिराज सूरि भी ध्यायें, कोढ़ मिटा जिन यश फैलाये।।9।।

मेंढ़क ने जिन भक्ति रचायी, देव बना वो अति सुखदायी।
मैना सति भी पाठ रचायें, अपने पति का कोढ़ मिटाये।।10।।

सम्यक्दर्शन प्राप्त करेंगे, निज आतम कल्याण करेंगे।
गायें 'आस्था' से जयमाला, पा जायें मुक्ति की माला।।11।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायैः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विनय सम्पन्नता भावना पूजा

(जोगीरासा छंद)

विनयवान को मुक्ति मिलती, विनय करो सब प्राणी।
विनय मोक्ष का द्वार बताया, कहती है जिनवाणी।।
विनय नम्रता सद्गुण पाने, प्रभु के दर हम आये।
पुष्पों से आह्वान करें नित, मन में अति हर्षाये।।

ॐ ह्रीं श्री विनय-सम्पन्नता भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

जल के घट को मस्तक पे रख, अभिषेक प्रभु का करते हैं।
त्रय रोग दूर कर दो भगवन्, बस यही प्रार्थना करते हैं।।
ये विनय भावना मोक्षप्रदा, हम विनय भाव उर धारेंगे।
हम विनय करें नव देवों का, जिनमत पे श्रद्धा धारेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर को गंध लगाने से, भव-भव के दुःख मिट जाते हैं।
केशर चंदन लेकर जिनवर, हम द्वार तिहारे आते हैं।। ये विनय..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद धारी जिनवर को, धवलाक्षत श्रेष्ठ समर्पित हैं।
हम अक्षय सुख को प्राप्त करें, ये भाव हृदय में सज्जित हैं।। ये विनय..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की क्यारी में पुष्पित, होते हैं पुष्प अनेक यहाँ।
अपने हाथों में पुष्प सजा, हम पूजें प्रभु के चरण महा।। ये विनय..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नमकीन मिठाई षट्रस की, पकवान मनोज्ञ चढ़ायेंगे।
प्रभुवर की पूजा करके हम, यह क्षुधा रोग विनशायेंगे।। ये विनय..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस मोह मान के कारण ही, जग में प्राणी दुःख पाते हैं।
प्रभुवर की आरती करके वो, मिथ्यात्व तिमिर विनशाते हैं ॥
ये विनय भावना मोक्षप्रदा, हम विनय भाव उर धारेंगे।
हम विनय करें नव देवों का, जिनमत पे श्रद्धा धारेंगे॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाते हैं, शुद्धात्म रूप प्रगटाने को।
हम लायें सुरभित श्रेष्ठ धूप, जिनवर को आज चढ़ाने को॥ ये विनय..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम हरे-भरे फल से पूजें, उत्तम फल को पाने हेतू।
करते हम अनुनय विनय नाथ, हम पायें मोक्ष सुपथ सेतू॥ ये विनय..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग के सारे नश्वर वैभव, हर प्राणी को मिल जाते हैं।
निज वैभव को पाने प्रभु से, हम आठों द्रव्य चढ़ाते हैं॥ ये विनय..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनय सम्पन्नता भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ज्ञान विनय से केवल ज्योति पाइये।
ज्ञान और ज्ञानी के नित गुण गाइये॥
विनय भावना की हम सब पूजा करें।
विनय भाव को धारें शिव सिद्धी वरें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञान विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन की सविनय आराधना।
जिन अर्चा से होवे पाप विराधना॥ विनय...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक चारित की सम्यक अर्चन करें।
चारित धर को विनय सहित वंदन करें।।
विनय भावना की हम सब पूजा करें।
विनय भाव को धारें शिव सिद्धी वरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्र विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक तप व तपधर गुरु की कर विनय।
विनय भाव से होता पापों का विलय।। विनय...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तप विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हम उपचार विनय जिनधर्म की।
इसी विनय से कड़ियाँ काँटे कर्म की।। विनय...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपचार विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

विनय मोक्ष का द्वार बताया शास्त्र में।
विनय करें हम देव गुरु की साथ में।।
विनय भाव के भेद प्रभुवर ने कहे।
विनय भाव से अर्घ समर्पण कर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री विनय सम्पन्नता भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु चरणों के पास में, मिलती शांति अपार।
पद्म पुष्प अर्पण करें, घट से शांति धार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– विनय भाव के साथ में, गायेंगे जयमाल।
विनय करें हम भाव से, वरें मोक्ष की माल।।

(शंभु छंद)

जय–जय हो विनय भावना की, यह विनय भावना हृदय धरें।
जो विनय भावना को धारे, वो तीर्थंकर पद प्राप्त करें।।

इस श्रेष्ठ भावना के कारण, मुनि तीर्थंकर प्रकृति बाँधें।
केवली श्रुतकेवली के दर पे, निज आतम को जिन से बाँधें।।1।।
जिनदेव गुरु जिनवाणी का, हम विनय भाव उर में लायें।
हम नमें प्रभू के चरणों में, मिथ्यात्व मान को विनशायें।।
कर विनय ज्ञान वा ज्ञानी की, सम्यक्ज्ञानी हम बन जायें।
मन में ना अहं कषाय धरें, बस विनय सरलता अपनायें।।2।।
यह अहं भाव ही प्राणी को, प्रभु से अति दूर कराता है।
जो अहम् छोड़कर नम्र बना, वो विनयवान बन जाता है।।
तप और तपस्वी गुरुओं की, हम विनय सदा करते जायें।
उपचार विनय को पालन कर, शिवपुर रमणी को पा जायें।।3।।
शिवभूति मुनि ने विनय सहित, केवललक्ष्मी श्री को पाया।
जब किया गुरु का अविनय तब, अज्ञानी बन अति दुःख पाया।।
धरसेन गुरु का विनय करें, मुनि पुष्पदंत और भूतबली।
षट्खंडागम की रचना कर, विख्यात हुये दो महाबली।।4।।
इस विनय भाव के आगम में, गुरुवर बहु भेद बताते हैं।
ये पंच भेद ही प्राणी को, पंचम गति में पहुँचाते हैं।।
हम तीन गुप्ति धर ध्यान धरें, श्री मुक्तिराज को पा जायें।
'आस्था' से प्रभु को नमन करें, बोधि समाधि जिन सम पायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

(गीता छंद)

यह शीलव्रत की भावना, हम शील को धारण करें।
अतिचार व्रत में ना लगे, निर्दोष व्रत गुरुवर धरें।।
इस भावना को पूजते, सुमनांजलि ले हाथ में।
आह्वान वा थापन करें, मुक्ति मिले जिननाथ से।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

अभिषेक जिनवर आपका, पावन करे मम भावना।
त्रय रोग से मुक्ति मिले, इस हेतु यह आराधना।।
यह भावना है शील की, इस शील की पूजा करें।
जो पालता यह शील व्रत, शिव सौख्य में झूला करे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का गंध चंदन, देह ताप निवारता।
प्रभु पाद का रज कण यही, मम पाप को परिहारता।। यह भावना..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय परम पद आपने, पाया करम को नाशके।
हमको वही पद प्राप्त हो, हम आ रहे प्रभु द्वार पे।। यह भावना..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काम अरि को नश दिया, अर्हंत प्रभुवर आपने।
ये पुष्पमाला हम चढ़ायें, कामरिपु को नाशने ।। यह भावना..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रबड़ी पुड़ी बरफी बना, नाना प्रकार मिठाईयाँ।
निज भूख तृष्णा नाशने, प्रभु को चढ़ा हरषे जिया।।
यह भावना है शील की, इस शील की पूजा करें।
जो पालता यह शील व्रत, शिव सौख्य में झूला करे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन रतन की थाल में, ये दीप चम-चम कर रहे।
प्रभु आरती में भक्त के, घुंघुरु छमाछम बज रहे।। यह भावना..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु की धूप को, खेते प्रभु के सामने।
आठों करम को नाशने, हम लीन प्रभु के ध्यान में।। यह भावना..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर दाड़िम आम केला, जाम जामुन रसभरी।
लेकर फलों की थाल से, जिनराज की पूजा करी।। यह भावना..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुंदर सुसज्जित थाल में, हम द्रव्य लेते अनगिने।
यह अर्घ अर्पण है उन्हें, जो मोक्ष के वासी बने।। यह भावना..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शीलव्रतेष्वनतिचार भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

देख अप्सरा देव की, ना लागे अतिचार।
शील व्रतों को हम धरें, जिन वच श्रद्धा धार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख मानवी नार को, मनवा ना ललचाय।
दोष लगे ना शील में, इस हित भक्ति रचाय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्य स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख तिर्यंची नार को, लगे न व्रत में दोष।
इस व्रत को हम पूजते, करें सदा जयघोष॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पशु स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्र काष्ठ की नार लख, करे ना मनवा पाप।
बचने उस संताप से, करें प्रभु का जाप॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रकाष्ठ स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वस्तु को देख हम, मन से करते त्याग।
जिन भक्ति में लीन हो, करें प्रभु से राग॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मनसा भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से हम ना करे, विषय वस्तु का भोग।
नाथ आपके ध्यान से, मिटे काम का रोग॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वचसा कृतिभोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से त्यागते, इन्द्रिय विषय कषाय।
पूजन ध्यान विधान में, लीन रहे मम काय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कायभोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम कृत भोग से, विरत हुये हम आज।
प्रभुवर तुमको पूजकर, पायें शिवपुर राज॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मकृत भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व तज पर कारित किया, किया पाप का बंध।
उसको हम सब त्याग कर, करें पुण्य का बंध॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मनाकारित भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर की रति अनुमोदना, भव-भव भ्रमण कराय।
उसको तजने आज हम, प्रभु की भक्ति रचाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री परानुमोदन विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

शील भावना आत्म भावना, स्व स्वभाव दिखलाती।
परद्रव्यों से मुक्त कराकर, परम ब्रह्म बनवाती।।
क्रोधादिक से रहित भाव ही, शील भाव कहलाये।
सर्व पाप का मोचन करने, उत्तम भक्ति रचायें।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निर्मल जल की धार से, मिट जाये मम पाप।
पुष्प चढ़ा प्रभु पाद में, करें निरन्तर जाप।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- शीलव्रतों की भावना, निरतिचार से पाल।
गाऊँ जय गुणमालिका, अर्पित पुष्पित माल।।

(शेर छंद) (तर्ज-हे दीन बंधु...)

जय-जय हो शील भावना जय शील गुणव्रती।
इस शील का पालन करें मुनिवर महाव्रती।।
इस शील व्रत की भावना के भेद अनेकों।।
इस भावना के साथ में विवेक भी रखो।।1।।

अठदस सहस्र भेद शील के हैं बताये।
सम्पूर्ण शीलवान श्री जिनेश कहाये।।

स्वदार शीलव्रत को धारते अणुव्रती।
सम्पूर्ण शील पालते मुनिवर महाव्रती।।2।।
सब स्त्रियों में मात बहिन पुत्री ही दिखे।
आगम में ऐसे भक्त की महिमा मुनि लिखे।।
स्त्री के राग की कथा सुनो नहीं कभी।
स्वादिष्ट व गरिष्ठ भोज ना करो कभी।।3।।
नवकोटि सहित प्राणियों इस व्रत को पालना।
तन-मन वचन की शक्ति से पापों को टालना।।
इस काम को वश में करो मन धर्म से जोड़ो।
निजात्म का स्वभाव शील शील से जोड़ो।।4।।
इस लोक में जिन जिन ने शील धर्म को पाला।
सीता मनोरमा ने पाई शील की माला।।
सुलोचना व द्रोपदी को देवता ध्याये।
श्री अंजना व चंदना को शील बचाये।।5।।
जिनधर्म में इस शील को महान् बताया।
इस शील से ही प्राणी जगत् पूज्य कहाया।।
हम भी धरें त्रिगुप्ति और शील को धरें।
'आस्था' से मोक्ष लोक पाय, शांति सुख वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना पूजा

(गीता छंद)

शुद्धोपयोगी आत्मा, नित ज्ञान में तल्लीन है।
उन परम जिनवर देव की, हम भक्ति में लवलीन हैं॥
अज्ञानता के नाश हित, हम कर रहे नित साधना।
आह्वान पुष्पों से करें, करने सतत आराधना॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

जल की झारी भर कर लाये, प्रभु के पद हम आज चढ़ायें।
जन्म-जरादिक रोग नशायें, प्रभु पूजा से पुण्य कमायें॥
ज्ञाननिधि के तुम हो स्वामी, ज्ञान दान दो अन्तरयामी।
अभीक्ष्ण ज्ञान की भक्ति रचायें, केवलज्ञानी हम बन जायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस घिस चंदन केशर लायें, प्रभु चरणन् में गंध लगायें।
जो प्रभुवर को गंध लगाता, वो ही देह सुगंधित पाता॥ ज्ञाननिधि..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर अक्षत नित्य चढ़ायें, अविनाशी अक्षय सुख पायें।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, भक्ति के रंग में रंग जायें॥ ज्ञाननिधि..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा उत्पल प्यारे, सुन्दर पुष्प सुगंधित सारे।
चढ़ा प्रभु को काम नशायें, परम ब्रह्म पदवी को पायें॥ ज्ञाननिधि..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु को नैवेद्य चढ़ाते, दुःख दारिद्र सभी मिट जाते।
क्षुधारोग से छुट्टी पाते, सब जीवों से पूजे जाते।।
ज्ञाननिधि के तुम हो स्वामी, ज्ञान दान दो अन्तरयामी।
अभीक्ष्ण ज्ञान की भक्ति रचायें, केवलज्ञानी हम बन जायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानदीप हरता अंधियारा, पाने प्रभु से ज्ञान उजारा।
रत्नमयी घृत दीपक लाते, जिन चरणों में नित्य चढ़ाते।। ज्ञाननिधि..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रक धूप अग्नि में डालें, अष्ट करम का संकट टालें।
जिन ने आठों कर्म नशायें, उनका हम सब कीर्त्तन गायें।। ज्ञाननिधि..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व फलों संग श्रीफल लायें, प्रभु को फल के गुच्छ चढ़ायें।
प्रभु सम हम भी शिवफल पायें, अपना जीवन सफल बनायें।। ज्ञाननिधि..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट द्रव्य की सुन्दर थाली, लय के साथ बजायें ताली।
नृत्य गान संग वाद्य बजायें, श्री जिनवर को अर्घ चढ़ायें।। ज्ञाननिधि..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

मतिज्ञान को हम भजें, बजा-बजा कर साज।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग की, करें भावना आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञानोपयोग का, हो विशेष श्रुतज्ञान।
पूजें इस श्रुतज्ञान को, नाशें कुश्रुत ज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू निमित्त श्रुतज्ञान से, होता भू का ज्ञान।
पूजें हम इस ज्ञान को, हरने निज अज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भौमनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग निमित्त श्रुत ज्ञान से, होय शुभाशुभ ज्ञान।
हम पूजें उस ज्ञान को, जानें वह श्रुतज्ञान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अंगनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर निमित्त श्रुतज्ञान से, सीखें स्वर विज्ञान।
स्वर विज्ञानी को जजें, करें प्रभु का ध्यान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री स्वरनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन निमित्त सुज्ञान ये, देता भावि ज्ञान।
सुश्रुत व्यंजन ज्ञान को, पूजें धर श्रद्धान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंजननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण निमित्त सुज्ञान ये, तन लक्षण बतलाय।
उसको पूजें आज हम, जिनवर के दर आय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री लक्षणनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छिन्न निमित्त सुज्ञान ये, नाना विध दे ज्ञान।
हमको सत् श्रुतज्ञान हो, इस विध करें विधान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री छिन्ननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वप्न निमित्त श्रुतज्ञान से, हो स्वप्नों का ज्ञान।
सिद्ध लोक का स्वप्न मम, पूर्ण करो भगवान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री स्वप्ननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अष्टांग निमित्त से, होय शुभाशुभ ज्ञान।
अष्ट अंग श्रुतज्ञान को, पूजें प्रभु दर आन॥10॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान उपयोग से, मूर्त्त द्रव्य का ज्ञान।
सम्यक् अवधिज्ञान हित, करें प्रभु का गान॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि शुभ ज्ञान से, करें तत्व श्रद्धान।
पूजें अवधिज्ञान को, बनने को भगवान॥12॥

ॐ ह्रीं श्री देशावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमावधि यह ज्ञान शुभ, निश्चित मुक्ति दिलाय।
पूजें हम इस ज्ञान को, जिन चरणन् में आय॥13॥

ॐ ह्रीं श्री परमावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावधि शुभ ज्ञान भी, मुनिराजों के होय।
उन मुनिवर की अंत में, सिद्ध अवस्था होय॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुमति मनःपर्यय श्रमण, जाने मन की बात।
पूजें हम इस ज्ञान को, करें करम का घात॥15॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय विपुलमति, ये हे ज्ञान प्रसिद्ध।
होता ये मुनिराज को, वे बनते हैं सिद्ध॥16॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म के नाश से, होता केवलज्ञान।
इसकी हम पूजा करें, पाने केवलज्ञान॥17॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर अर्हंत केवली, ज्ञानमयी निज को जाने।
श्रमण लगें नित ज्ञान ध्यान में, हम आये उनको ध्याने।।
ज्ञानमयी उपयोगवान ही, शुद्ध बुद्ध बन जाये।
उनको ध्या हम प्रभु चरणों में, मंगल द्रव्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पाते साधक सिद्धि को, करें ज्ञान अभ्यास।
शांति हो त्रय लोक में, करते यही प्रयास।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- चंपा जूही केवड़ा, निशिगंधा कचनार।
सेवन्ती शुचि मोगरा, जिन पद अर्पित हार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

(धत्ता)

हे ज्ञान निधीश्वर, हे जगदीश्वर, हमको सच्चा ज्ञान मिले।
जयमाला गायें, वाद्य बजायें, ज्ञान सुमन के फूल खिले।।

(नरेन्द्र छंद)

अभीक्ष्ण ज्ञान ही श्रेष्ठ ज्ञान है, ज्ञान भावना की जय हो।
ज्ञान भावना में जो रत हैं, ज्ञानी योगी की जय हो।।
श्री जिनवर ने ज्ञान रतन के, भेद अनेक बताये हैं।
ज्ञान बिना सब जीव जगत के, कष्ट उठाते आये हैं।।1।।

मुख्य भेद तो पाँच बताये, उत्तर भेद अनेक कहे।
मतिश्रुत अवधि ज्ञान तीसरा, मनःपर्यय ये ज्ञान कहे।।
केवलज्ञान एक है जिनके, युगपत सबको जान रहे।
हम भी केवलज्ञान जगाने, ज्ञानेश्वर की शरण लहे।।2।।

अष्ट अंग निमित्त ज्ञानधर, भूमि लक्षण स्वर व्यंजन।
अंग भौम स्वप्नादि ज्ञाता, हरते भव्यों के क्रंदन।।
देशावधि परमावधि धारी, सर्वावधि ऋजु विपुलमति।
केवलज्ञान जगाने भगवन्, तव चरणों में नमे यती।।3।।

ज्ञानाभ्यास साधना से ही, श्री अकलंक प्रसिद्ध हुयें।
पात्र केशरी गुरुवाणी सुन, संयम धार प्रसिद्ध हुयें।।
एक हरिण गुरुवाणी सुनकर, बालि बन मुक्ति पायें।
क्रूर शेर भी गुरु वचनों से, वीर जिनेश्वर बन जाये।।4।।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य जीव सम्यक् पाता।
ऐसा प्राणी ज्ञानी बनकर, तीर्थंकर पदवी पाता।।
ज्ञानी जन की सेवा कर हम, पायें उनसे ज्ञान निधी।
हित का लाभ अहित की हानि, 'आस्था' पाये पूर्ण विधी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

संवेग भावना पूजा

(नरेन्द्र छंद)

जो संवेग भावना धारें, वैरागी वे कहलायें।
मुनि बन कर जो करें साधना, उनकी हम पूजा गायें।।
शुभ भावों की ज्योति जगाने, पुष्पों से आह्वान करें।
प्रभु मुख मुद्रा हृदय बसाने, पूजन वंदन भजन करें।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

सिर पे जल का कुंभ, माणिक मोती वाला।
भर-भर कलशा नीर, प्रभु पे हमने डाला।।
मन में हो संवेग, यही कामना मन की।
पूर्ण करो भगवान, शक्ति बढ़े चेतन की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से पद पूज, भव आताप नशायें।
नतमस्तक हम होय, अपने शीश लगायें।। मन में..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल मनोज्ञ, और चढ़ायें मोती।
प्रभु पूजा से पाय, अविचल अक्षय ज्योती।। मन में..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नूतन पुष्प चढ़ाय, प्रभु को चुनकर ताजे।
काम रोग मिट जाय, खुले मोक्ष दरवाजे।। मन में..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की अर्चा श्रेष्ठ, क्षुधा मिटाने वाली।
प्रभु को अर्पित आज, षट्रस व्यंजन थाली।।
मन में हो संवेग, यही कामना मन की।
पूर्ण करो भगवान, शक्ति बढ़े चेतन की।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवलज्ञानी नाथ, करें आरती तेरी।
पायें सम्यक् ज्योत, मेटो भव दुःख फेरी।। मन में..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंबर की ये गंध, जिन मंदिर महकाये।
धूप अग्नि में खेय, हम निज कर्म नशायें।। मन में..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चीकू दाड़िम आम, पनस बिजौरा श्रीफल।
चढ़ा प्रभु को आज, पायें हम भी शिवफल।। मन में..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध से पूज, माँगें तुमसे भगवन्।
पद अनर्घ की आश, पूरी कर दो भगवन्।। मन में..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संवेग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

पृथ्वीकाय के दुःख ना पायें, इस गति में हम कभी न जायें।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक भव हम ना पायें, इस गति के दुःख से बच जाये।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जलकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि काय के दुःख ना पायें, इस गति से छुटकारा पायें।। श्री जिनवर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकाय का भव ना पायें, सर्व दुःखों से मुक्ति पायें।। श्री जिनवर..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिक दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पति काया दुःखदायी, हमें बचाओ हे जिनरायी।। श्री जिनवर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिक दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठदस बार मरण जहँ पाये, यह गति नित्य निगोद कहाये।। श्री जिनवर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नित्यनिगोद दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतर निगोद महादुःखदानी, रहे यहाँ मिथ्यात्वी प्राणी।। श्री जिनवर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री इतरनिगोद दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इन्द्रिय के दुःख से छूटे, जो जिन भक्ति का रस लूटे।। श्री जिनवर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीन्द्रिय के दुःख ना पाये, जो जिन पद में चित्त लगाये।। श्री जिनवर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरिन्द्रय के दुःख ना पायें, हम जिनवर की शरणा आयें।। श्री जिनवर..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री चतुन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज गति के दुःख ना पायें, सम्यक् दर्शन धर सुख पायें।। श्री जिनवर..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय मनुष्य पर्यायजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवगति के दुःख ना पायें, लोभ छोड़ जिनभक्ति रचायें।। श्री जिनवर..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री देवगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यक् गति के दुःख ना पायें, तज माया जिन भक्ति रचायें।। श्री जिनवर..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक गति के दुःख ना पाये, क्रोध छोड़ जिन भक्ति रचायें
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।14।।

ॐ ह्रीं श्री नरकगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (काव्य छंद)

धर संवेग विचार, मोह त्याग घर छोड़ें।
भाव विराग जगाय, ममता से मुख मोड़ें।।
यह संसार असार, जिनवर हमें बताते।
लेकर आठों द्रव्य, उनको अर्घ चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरशीतिलक्षयोनि जनित संसार दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वेग और आवेग तज, धरें सदा संवेग।
शांतिधारा से मिटे, वसु कर्मों का वेग।। शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम मल्ल को मारकर, धारें हम वैराग।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, नष्ट होय सब राग।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– संवेग बढ़ावें, वेग घटावें, वैरागी बन मुक्ति वरें।
मुनिव्रत हम धारें, कर्म विदारें, जयमाला गुणगान करें।।

(सखी छंद)

संवेग भावना धारें, हम अपना जनम सुधारें।
संवेग करे मन पावन, संवेग करे तन पावन।।1।।

जो जग भोगों के त्यागी, वो ही बनते वैरागी।
जो तन को नश्वर जाने, वो निज आतम पहिचाने।।2।।
अंजन मुनिव्रत अपनाये, वो कर्म काट शिव जाये।
विद्युच्चर मुनिव्रत धारे, आये सन्मति के द्वारे।।3।।
संवेग बिना यह प्राणी, चहुँ गति भटके अज्ञानी।
त्रस थावर योनी पाता, हर गति में कष्ट उठाता।।4।।
बलशाली जब बन जाता, निर्बल को दुःख पहुँचाता।
पापों का बंध बढ़ाता, तब मार करम की खाता।।5।।
पंचेन्द्रिय बना असंज्ञी, या मन वाला हो संज्ञी।
तिर्यंचों के दुःख भारी, कहने में जिह्वा हारी।।6।।
जब मनुज गति को पाया, भोगों में इसे गँवाया।
नरकों में कष्ट उठाये, भूखे-प्यासे दुःख पाये।।7।।
देवों की माया नगरी, ईर्ष्या है मन की गगरी।
इनकी माला मुरझाये, मोही थावर तन पाये।।8।।
चारों गति में दुःख पाये, हर गति में कष्ट उठाये।
अब सम्यक्दर्शन पायें, संवेग भावना भायें।।9।।
व्रत समिति गुप्ति अपनायें, मुनिमुद्रा मुक्ति दिलाये।
मन में संवेग जगायें, 'आस्था' धर शिव सुख पायें।।10।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शक्तितस्त्याग भावना पूजा

(गीता छंद)

ये भावना है त्याग की, जो त्याग भाव बढ़ा रही।
निज आत्म शक्ति को बढ़ाने, राग भाव घटा रही।।
इस भावना की भक्ति से, आह्वान वा थापन करें।
जिनराज के दरबार में, भक्ति भजन कीर्त्तन करें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद) (तर्ज-हे दीन बन्धू...)

कंचन कलश में नीर क्षीर सिंधु का भरें।
त्रय रोग को नशाने प्रभु का न्हवन करें।।
ये भावना है त्याग की कुछ त्याग हम करें।
इस त्याग भावना से मुक्ति धाम को वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से प्रभु आपका गुणगान हम करें।
संसार ताप नाशने चंदन चरण धरें।। ये भावना..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से ही मिल पायेगा अक्षय अखंड पद।
अक्षत चढ़ाके नाथ से पायेंगे मोक्ष पद।। ये भावना..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भर-भरके पुष्प गुच्छ भक्त नित्य चढ़ायें।
जिनराज के समान आत्म शक्ति जगायें।। ये भावना..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू इमरती बरफी कलाकंद बनायें।
भर-भरके थाल नाथ को नैवेद्य चढ़ायें।। ये भावना..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति अखंड नाथ तेरे द्वार पे जले।
हम दीप थाल लेके करने आरती चलें।।
ये भावना है त्याग की कुछ त्याग हम करें।
इस त्याग भावना से मुक्ति धाम को वरें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप डालते कर्मों को जलाने।
प्रभु के चरण में आये हम तो भक्ति रचाने।। ये भावना..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे रसीले फल से भक्त भक्ति रचायें।
पूजा रचायें नाथ का विधान करायें।। ये भावना..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अनर्घ पद के हेत नाथ को ध्यायें।
ढोलक नगाड़े व मृदंग वाद्य बजायें।। ये भावना..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तितस्त्याग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

आहार दान श्रेष्ठ महादान कहाता।
ये दान भव्य प्राणियों को मोक्ष दिलाता।।
शक्त्यनुसार त्याग भावना को भाइये।
इसके धनी मुनीश की पूजा रचाइये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आहारदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी गुरु की भक्ति ज्ञानवान बनाये।
औ ज्ञानवान श्रेष्ठ पूर्ण ज्ञान दिलाये।। शक्त्यनुसार..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आदि चार संघ को हम देय औषधी।
पायें अनंत शक्ति सौख्य ज्ञान औषधी।।
शक्त्यनुसार त्याग भावना को भाइये।
इसके धनी मुनीश की पूजा रचाइये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री औषधदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागी भवन बनाओ करो संत सुरक्षा।
देकर के अभयदान करो आत्म सुरक्षा।। शक्त्यनुसार..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभयदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (काव्य छंद)

त्याग भावना भाय, बनते जो वैरागी।
छोड़ चले संसार, प्रभुवर के अनुरागी।।
भक्ति भाव के साथ, पूरण अर्घ चढ़ायें।
त्याग भावना भाय, तीर्थंकर बन जायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– त्याग भावना धर्म की, श्रद्धा उर में धार।
निर्मल जल से हम करें, प्रभु चरणों में धार।। शांतये शांतिधारा।

दोहा– समिति गुप्ति व्रत त्याग ही, मुनियों के श्रृंगार।
जिनवर वा मुनिराज को, चढ़ा रहे हम हार।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– शक्तितस्त्यागी, बन वैरागी, जो भविजन यह त्याग करे।
मिल जाये शांति, मिटे अशांति, हम जयमाला गान करें।।

(चौपाई)

जय–जय त्याग भावना प्यारी, त्याग धर्म जग में सुखकारी।
त्यागी जिसने संपत् सारी, मुनि मुद्रा पायी सुखकारी।।1।।
त्याग भावना त्याग सिखाये, राग–द्वेष की आग नशाये।
त्याग भावना पूज्य बनावे, राग छुड़ा वैराग्य जगावे।।2।।

तीर्थंकर जब वैभव त्यागे, सुर नर उनको भजने लागे।
द्वादश अनुप्रेक्षा प्रभु भाते, तब लौकान्तिक सुरगण आते।।3।।
अनुमोदन करके हर्षाते, सब कुछ त्याग प्रभु वन जाते।
त्याग आत्म सुख को दिलवायें, बीज मोक्ष का वपन कराये।।4।।
त्याग गर्भकल्याण दिलायें, जन्मकल्याणक त्याग करायें।
त्याग ज्ञानकल्याण दिलाये, त्याग मोक्षकल्याण दिलाये।।5।।
त्याग पंचकल्याण दिलाये, त्याग तीर्थंकर पद दिलवाये।
त्याग कर्म का पिण्ड नशाये, समवशरण भी वो रचवाये।।6।।
सौ-सौ इन्द्र नमें गुण गायें, गणधर भी जिनको नित ध्यायें।
त्याग भाव मुक्ति की चाबी, त्याग भाव से मिटे खराबी।।7।।
चार चतुष्टय त्याग दिलाये, गुण अनंत के नाथ बनाये।
शाश्वत सुख भी त्याग दिलाये, हम भी त्याग भाव अपनाये।।8।।
भेद चार इसके बतलाये, औषध अभय अहार कहाये।
ज्ञानदान कर पुण्य कमायें, श्रावक श्रद्धा भाव जगाये।।9।।
आदिनाथ ने दान दिया था, तीर्थंकर पद प्राप्त किया था।
शांतिनाथ ने दान दिया था, तीन पदों को प्राप्त किया था।।10।।
श्री श्रेयांस कुवर बन दानी, गणधर बन पाई शिव रानी।
जो भवि प्रथम आहार कराये, तीर्थंकर संघ शिवसुख पाये।।11।।
गृह त्यागी की करके सेवा, सेवा कर पायें सुख मेवा।
त्याग भावना जो भी धारे, 'आस्था' धर वो मोक्ष पधारे।।12।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शक्तितस्तप भावना पूजा

(अवतार छंद) (चाल–नंदीश्वर श्री जिन..)

शक्तितस्तप आधार, पावन पुण्य मही।
जिनदेव लगाओ पार, तुमरी शरण लही।।
भक्ति से पूजें आज, कुसुमांजलि लायें।
आह्वान करें हम आज, प्रभु के गुण गायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

हे तीन लोक के ईश, तुमको ध्याते हैं।
चरणों में हो नत शीश, नीर चढ़ाते हैं।।
शक्तितस्तप मनहार, हमको पार करे।
प्रभु पूजा मंगलकार, मम उद्धार करे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरणों के पास, शीतलता पायें।
शीतल चंदन शुचिवास, भव दुःख विनशाये।। शक्तितस्तप..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज मनोज्ञ, जिन को अर्पण है।
मिल जाये अक्षय सौख्य, हमारा यह प्रण है।। शक्तितस्तप..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से उत्तम रूप, प्रभु का मनहारी।
पुष्पों के गुच्छ अनूप, लाये नर–नारी।। शक्तितस्तप..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम षट्रस व्यंजन श्रेष्ठ, थाली भर लायें।
दो ज्ञान दान जिन ज्येष्ठ, योगी बन जायें।। शक्तितस्तप..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नों के दीप प्रजाल, आरती रोज करें।
जिन सन्मुख लेकर थाल, छम-छम नृत्य करें।।
शक्तितस्तप मनहार, हमको पार करे।
प्रभु पूजा मंगलकार, मम उद्धार करे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाय, कर्म नशाने को।
हे त्रिभुवनपति जिनराय ! तव गुण पाने को।। शक्तितस्तप..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाड़िम केला के साथ, जामुन सीताफल।
फल चढ़ा रहे हम नाथ, देना मोक्ष सुफल।। शक्तितस्तप..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन अक्षत फूल, नैवज दीप लिया।
पाने प्रभु की पग धूल, अर्पित अर्घ किया।। शक्तितस्तप..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शक्तितस्तप भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अनशन तप की भावना, करते श्री मुनिराज।
शक्तितस्तप भाव को, पूजें हम सब आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनशन तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊनोदर तप भावना, तप की शक्ति जगाय।
हमको ये शक्ति मिले, प्रभु की भक्ति रचाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदर तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्ति परिसंख्यान तप, बाह्य सुतप कहलाय।
उसके धारक श्रमण को, हम सब शीश झुकाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री व्रत परिसंख्यान तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो करते परित्याग रस, षट् रस व्यंजन त्याग।
उनको षट्रस से भजें, पार लगाये त्याग।।4।।

ॐ ह्रीं श्री रस परित्याग तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्त शय्यासन धरें, आतम शक्ति जगाय।
उन ऋषियों को हम भजें, भर-भर थाल चढ़ाय।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्त शय्यासन तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश तप जो करें, काया से तज मोह।
पूजें हम उनके चरण, बन जायें निर्मोह।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप श्रेष्ठ है, अन्तः तप कहलाय।
हम इसकी अर्चा करें, भाव विशुद्ध बनाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय महातप कह रहा, करो विनय का भाव।
विनय तपस्वी से हमें, है आत्मीय लगाव।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विनय तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्य महान् तप, तीर्थंकर पद देय।
गुरु सेवा जिन भक्ति से, ये पदवी वर लेय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो स्वाध्याय तप, पाने स्व का ज्ञान।
वो इस तप को सिद्ध कर, पाते केवलज्ञान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप व्युत्सर्ग महान् है, पाले श्री यतिराज।
शक्तितस्तप भावना, दे मुक्ति का ताज।।11।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम तप यह ध्यान है, ध्यान जिनेश बताय।
परम ध्यान के लाभ हित, हम जिन भक्ति रचाय।।12।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यान तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (काव्य छंद)

तप का तीव्र प्रभाव, कर्म समूह जलाता।
तप में तप कर जीव, सिद्ध रूप पा जाता।।
महातपस्वी संत, उनकी भक्ति रचायें।
तन तपमय बन जाय, ये ही भाव जगायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक में शांति हो, करें यही हम भाव।
प्रभु के पद में नीर दें, वरें शांति सद्भाव।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- मन को मोहित जो करे, ऐसे पुष्प मँगाय।
श्री जिनवर के पाद में, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- तप से होती निर्जरा, तप से इच्छा रोक।
तप की जयमाला पढ़ें, पायें शिवपुर लोक।।

(सखी छंद)

बोले तप का जयकारा, तप से मिलता शिव द्वारा।
जिन-जिन ने तप स्वीकारा, है उनको नमन हमारा।।1।।
तप में जो तपते जायें, वो ही अर्हत पद पायें।
जो भविजन तप अपनायें, उनकी जयमाला गायें।।2।।
तप को धारा मुनियों ने, तप को धारा ऋषियों ने।
तप से इच्छा को रोका, तपकर कर्मों को रोका ।।3।।

तप में मुनि भाव लगाते, तप से ऋद्धि मुनि पाते।
तप ऋद्धिधर मुनि आये, तत्क्षण सुभिक्ष हो जाये।।4।।
मुनि योग जहाँ अपनाते, जीवों के कष्ट मिटाते।
वन में गुरु ध्यान लगाते, जीवों में प्रेम बढ़ाते।।5।।
वैरी पशु वैर भुलाते, गुरु चरणों में रम जाते।
ये तप ही पूज्य बनाये, ये तप ही मोक्ष दिलाये।।6।।
तप में तपकर गुरु ज्ञानी, बनते हैं केवलज्ञानी।
तप की महिमा अति भारी, तप को पूजें संसारी।।7।।
तप तीर्थंकर प्रभु धारें, अरि नाश सिद्धपद धारें।
शक्तितस्तप अपनायें, सर्वोच्च शिखर को पायें।।8।।
तप द्वादश विधी बताया, ऋषि-मुनियों ने अपनाया।
गिरते को तप बचवाये, दुर्गति से मुक्ति दिलाये।।9।।
वृषभेश्वर जिन तप धारें, षट् मास योग वे धारें।
बाहुबली वर्षी तप कर, वे बनें सिद्ध परमेश्वर।।10।।
मुनि भरत सुकोशल स्वामी, बालि शिवभूति स्वामी।
मुनि गजकुमार तप धारे, तप से सब मोक्ष सिधारे।।11।।
जो त्याग भावना भाये, वो तप से कर्म नशाये।
जो भव्य भावना भाये, तीर्थंकर पदवी पाये।।12।।
तप सम कुछ जाप नहीं है, तप सम कुछ पाठ नहीं है।
हम समिति गुप्ति व्रत पाले, 'आस्था' से तप अपना लें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

साधु समाधि भावना पूजा

(गीता छंद)

साधु समाधि साधकर, शिवलोक के वासी बने।
समता व संयम साधना, जिनमें भरें गुण अनगिने।।
इनके गुणों की प्राप्ति हित, हम भाव से वंदन करें।
आह्वान करते आज हम, अर्चा प्रभु की नित करें।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - दर्श विशुद्धि)

स्वर्ण रजत के कलश भराय, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।
साधु समाधि भावना भाय, मोक्ष सिद्धि हमको मिल जाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन चरणन् गंध लगाय, भव संताप तुरत नश जाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयदानी नाथ कहाय, अक्षत प्रभु के चरण चढ़ाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपूजा ही काम नशाय, प्रभु चरणों में पुष्प सजाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु को नेवज श्रेष्ठ चढ़ाय, क्षुधा वेदनी रोग नशाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत कपूर के दीप जलाय, श्री जिनवर की आरति गाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।
साधु समाधि भावना भाय, मोक्ष सिद्धि हमको मिल जाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घटों में धूप खिराय, प्रभु भक्ति की धूम मचाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे भरे फल नित्य चढ़ाय, प्रभु को पूज मोक्ष फल पाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि द्रव्य सजाकर लाय, श्री जिनवर की भक्ति रचाय।
करो कल्याण..... साधु समाधि.....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

श्री पुलाक मुनि की हम नित पूजा करें।
ये साधु भी करें समाधि शिव वरें।।
साधु समाधि मोक्ष प्रदायी भावना।
आत्म समाधि की करते हम भावना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुलाक मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुश मुनि भी करते उत्तम साधना।
उन मुनिवर की करते हम आराधना।।
साधु समाधि मोक्ष प्रदायी भावना।
आत्म समाधि की करते हम भावना।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वकुश मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कुशील कषायें नित ही कृष करें।
क्रम-क्रम से ये भी मुनिवर मुक्ति वरें।। साधु..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुशील मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निर्ग्रन्थ श्रमण भी जाते मोक्ष में।
इनकी पूजा से हम पहुँचे मोक्ष में।। साधु..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थ मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्नातक जिनवर का करते जाप हम।
श्री अरिहंत व सिद्ध जपें दिन रात हम।। साधु..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री स्नातक मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

(काव्य छंद)

साधु करें समाधि, अष्टम वसुधा पाने।
सात आठ भवधार, निश्चय मुक्ति ठाने।।
उन मुनियों को आज, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
उन सम हम भी आज, यही भावना भायें।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विश्व शांति की नाथ से, करें प्रार्थना एक।
जल थल और आकाश में, छाये शांति एक।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– प्रभुपद में पंकज चढ़ा, मन पंकज बन जाय।
परमेश्वर के चरण में, झुक-झुक शीश नवाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

(धत्ता)

यह साधु समाधि, मेटे व्याधि, जीवों का कल्याण करे।
जिनगुण जयमाला, करे उजाला, हम जयमाला पाठ करें।।

(अडिल्ल छंद)

साधु समाधि मंगलकारी भावना।
साधक सिद्धी की करते हैं कामना।।
प्रभु का नाम सुमरते अपना तन तजें।
उनको तीनों लोक और सुरगण भजें।।1।।

मरण समाधि एक बार जो भी करे।
सात आठ भव में निश्चय मुक्ति वरे।।
सम्यक् विधी से राग-द्वेष का कर शमन।
क्रोध मान मायाचारी का कर वमन।।2।।

दीक्षा लेकर करें कठिन जो साधना।
उनकी हम करते हैं नित आराधना।।
मरण समाधि करने मुनि तैयार हैं।
हर क्षण मृत्यु का करते सत्कार हैं।।3।।

जीने मरने की इच्छा होती नहीं।
भव भोगों की वांछा भी उनको नहीं।।
गुरु पे जब उपसर्ग कोई आकर करे।
या दुष्काल पड़े तब मृत्यु व्रत धरें।।4।।

भद्रबाहु गुरु साधु समाधि व्रत धरें।
चंद्रगुप्त मुनि उनकी नित सेवा करे।।
सब तीर्थंकर साधु समाधि साधते।
भव्य जीव सब उनको नित आराधते।।5।।

अति असाध्य व्याधि जब तन को घेर लें।
समता से उत्तम समाधि मुनि साध लें।।
'आस्था' से ऐसे गुरुवर को कर नमन।
साधु समाधि धार वरें शिवपुर सदन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

वैयावृत्त्य भावना पूजा

(शम्भु छंद)

जो वैयावृत्य करें निशदिन, दशविध मुनियों साधर्मी की।
वो वैयावृत्य महातप धर, पाते पदवी तीर्थंकर की।।
उनका आह्वान करें नित हम, पुष्पाञ्जलि हाथों में लायें।
आओ जिनवर मम हृदय बसो, तव पूजा कर मन हर्षाये।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

हम कुंभ सजायें, जल भर लायें, प्रभु पद दे त्रय रोग हरें।
जन्मादिक व्याधि, नाश उपाधि, रत्नत्रय निधि प्राप्त करें।।
जिनदेव हमारे, हम तुम द्वारे, पूजन करने नित आयें।
हे नाथ ! तिराओ, पार लगाओ, हम भी तुम सम गुण पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चंदन लायें, खूब घिसायें, प्रभु के चरणों में चर्चें।
भव ताप नशायें, मन हर्षायें, झूमे नाचें नित अर्चें।। जिनदेव..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद दाता, त्रिभुवन त्राता, अक्षत पुंज चढ़ाते हैं।
उत्तम पद पायें, जिनगुण गायें, भव का भ्रमण मिटाते हैं।। जिनदेव..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चुनायें, माल बनायें, पूजें प्रभु के चरण कमल।
कमलादि सजाते, कमल चढ़ाते, खिल जाये मम हृदय कमल।। जिनदेव..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु व्यंजन लाये, जिनपद ध्यायें, रोग क्षुधा परिहार करें।
हम नृत्य करेंगे, भक्त बनेंगे, वाद्य बजा जयकार करें।। जिनदेव..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपों की थाली, छटा निराली, जिन मंदिर आलोक करें।
हम दीप चढ़ायें, आरती गायें, केवल रवि आलोक वरें।।
जिनदेव हमारे, हम तुम द्वारें, पूजन करने नित आयें।
हे नाथ ! तिराओ, पार लगाओ, हम भी तुम सम गुण पाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म रुलाये, भ्रमण कराये, चारों गति में भरमाये।
हम धूप चढ़ायें, प्रभु को ध्यायें, कर्म नशा शिवसुख पायें।। जिनदेव..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले हरे-हरे फल, हरें करम मल, मधुर-मधुर फल लाते हैं।
शिवसुख भंडारी, सब दुःखहारी, जिनवर को हम ध्याते हैं।। जिनदेव..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज हमारे, आप सहारे, भक्त पुकारें भक्ति से।
हम अर्घ चढ़ायें, ताल बजायें, अर्चें हम निज शक्ति से।। जिनदेव..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैयावृत्त्य भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

आचार्यों की करते सेवा, जिनकी सेवा करते देवा।
इनको हम सब अर्घ चढ़ायें, वैयावृत्त्य भावना भायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य जाति वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय की वैयावृत्ति, देती उन सम ज्ञान प्रवृत्ति।। इनको..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय जाति वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु होते बड़े तपस्वी, ध्यान लीन वे श्रेष्ठ मनस्वी।। इनको..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्वी जाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैक्ष्य गुरु नित शिक्षा देते, रत्नत्रय की शिक्षा देते।। इनको..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शैक्ष्य जाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्लान मुनि रोगी कहलाये, इनकी सेवा रोग मिटाये।
इनको हम सब अर्घ चढ़ायें, वैयावृत्त्य भावना भायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ग्लानजाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण के गणनायक स्वामी, चार संघ के ये हैं स्वामी।। इनको..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री गणजाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल जाति उत्तम कुल वाले, मुनि जिन धर्म बढ़ाने वाले।। इनको..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुलजाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें चतुर्विध संघ की सेवा, इनकी सेवा देती मेवा।। इनको..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विध संघजाति वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें साधुओं की हम पूजा, जिनको तीन लोक ने पूजा।। इनको..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री साधुजाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई श्रमण मनोज्ञ कहाते, हम सब द्रव्य मनोज्ञ चढ़ाते।। इनको..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञजाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

द्वादश तप में वैयावृत्ति, आभ्यन्तर तप कहलाता है।
वैय्यावृत्ति जो नित करता, वो तीर्थंकर बन जाता है।।
निर्ग्रन्थ श्रेष्ठ सब श्रमणों की, सेवा जिनने है सिखलायी।
वसुविधी द्रव्यों की थाल चढ़ा, हमने प्रभु की महिमा गायी।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सब प्राणी संसार के, होवें सदा निरोग।
शांतिधार करके प्रभू, धारूँ मैं शुभ योग।। शांतये शांतिधारा।

दोहा- वकुल मालती केवड़ा, औ चंपादिक फूल।
प्रभु के चरणों में चढ़ा, पाऊँ चरणन् धूल।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- वैयावृत्ति तप करे, गुरु पे आस्था धार।
जयमाला गुणगान से, करें आत्म उद्धार।।

(अवतार छंद) (तर्ज–चौबीसों श्री जिनचंद...)

वैयावृत्ति गुणखान, धरम का मूल कहा।
वैयावृत्ति सुखखान, मिलती शांति जहाँ।।
जो करे गुरु की सेव, शिव सुख पाते हैं।
वैयावृत्ति के भेद, गुरु बतलाते हैं।।1।।
सूरि पाठक मुनिराज, तप निधी शैक्ष्य मुनि।
या ग्लान श्रमण गुरुराज, गणकुल आदि मुनि।।
मुनि आर्या आदि संघ, इनकी भक्ति करे।
साधु मनोज्ञ हैं वंद्य, भव से पार करें।।2।।
वैयावृत्ति का सार, प्रभु ने बतलाया।
मिलता मुक्ति का द्वार, सबको समझाया।।
त्यागें ग्लानि का भाव, वैयावृत्ति करें।
वात्सल्य प्रेम सद्भाव, मन में प्रगट करें।।3।।
तीर्थंकर पूर्व अपूर्व, वैयावृत्ति करें।
पांडु सुत मजले भीम, वैयावृत्ति करें।।
इससे विष अमृत रूप, हो उदरस्थ करे।
मुनि को दे औषध दान, मोक्ष महान् वरें।।4।।
जो करते वैयावृत्त, वो अर्हंत बने।
या बन तीर्थंकर देव, त्रिभुवन पूज्य बने।।
हम तजें मान दुर्भाव, वैयावृत्य करें।
मन में धर वत्सल भाव, 'आस्था' मोक्ष वरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्हद् भक्ति भावना पूजा

(गीता छंद)

हे वीतरागी ! सर्वज्ञाता, केवली अरहंत जिन।
रागादि अठदस दोष विरहित, पूजते हम रात-दिन॥
चऊ घातिया का नाशकर, अरहंत पद को पा लिया।
आओ विराजो मम हृदय, आह्वान पुष्पों से किया॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

केवलज्ञानी अरहंत देव, सर्वज्ञ हितैषी कहलाते।
उनके चरणों में नीर चढ़ा, हम त्रय रोगों को विनशाते॥
अरहंत नाम मंगलकारी, उत्तम है शरणागत जग में।
पाँचों पद में अरहंत प्रथम, यह नाम जपें हम नित मन से॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन की होती है, बरसात नाथ के चरणों में।
हम भी चंदन का लेप करें, जिनराज आपके चरणों में॥ अरहंत...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत प्रभु अक्षयदानी, सब जीवों का कल्याण करें।
हम अक्षत पुंज चढ़ा प्रभु को, अक्षय पद का वरदान वरें॥ अरहंत...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु हरि वा महेश, ये काम रिपु से हार गये।
हम पुष्प चढ़ाते हैं उनको, जिनसे कामादिक् हार गये॥ अरहंत...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधा कर्म भगवन् हमको, चारों गति में भटकाता है।
जो नेवज नित्य चढ़ाता है, वो क्षुधा रोग विनशाता है॥ अरहंत...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्ज्ञान दिवाकर तीर्थंकर, श्री समवशरण में शोभ रहे।
हम करें आरती नृत्य करें, प्रभु भक्तों के मन लोभ रहे॥
अरहंत नाम मंगलकारी, उत्तम है शरणागत जग में।
पाँचों पद में अरहंत प्रथम, यह नाम जपें हम नित मन से॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने ध्यानानल के द्वारा, सब कर्म समूह जलाये हैं।
हे वीतराग ! परमात्म देव, हम धूप चढ़ाने आये हैं॥ अरहंत...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरिहंत प्रभु के सुमिरण से, शाश्वत शिव पट खुल जाते हैं।
शिवफल पाने तुमसे भगवन्, हम फल के गुच्छ चढ़ाते हैं॥ अरहंत...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षायिक लक्ष्मीधारी भगवन्, क्षायिक दानी क्षायिक ज्ञानी।
हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं, जो हैं अनर्घ्य पद के दानी॥ अरहंत...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हद् भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पहला प्रातिहार्य शुभ, तरु अशोक कहलाय।
उनके नीचे राजते, श्री जिनेश मन भाय॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि सुरपति करे, समवशरण में जाय।
सर्व पुष्प सीधे गिरें, यह अतिशय कहलाय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि जिनराज की, मोक्षमार्ग दर्शाय।
उस वाणी को हम भजें, समवशरण में आय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् जिन पर यक्षगण, चौंसठ चँवर ढुराय।
ऐसे श्री अरिहंत को, हम पूजें मन लाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चामर प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसन से ऊपर अधर, बैठे श्री जिनराज।
उनकी हम अर्चा करें, भक्ति भाव से आज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहासन प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामंडल प्रभु आपका, भव दिखलाये सात।
इससे ही प्रभु द्वार में, नहि होते दिन-रात।।6।।

ॐ ह्रीं श्री भामंडल प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा दुंदुभि, बजती प्रभु के द्वार।
उनकी हम पूजा करें, जो जग तारणहार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र तीन जिनराज के, शोभ रहे मनहार।
त्रिभुवनपति की अर्चना, करता है संसार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी नाशकर, पाया ज्ञान अनंत।
हम विधान उनका करें, पाने ज्ञान अनंत।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतज्ञान सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नश, पाया दर्श अनंत।
विधिवत् हम पूजें प्रभो !, पाने दृष्टि अनंत।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतदर्शन सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को नाशकर, पाया सौख्य अनंत।
ऐसे जिन को हम भजें, पाने सौख्य अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतसुख सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अंतराय को नाश जिन, पायें वीर्य अनंत।
उनकी पूजा हम करें, पाने वीर्य अनंत।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतबल सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

णवकार मंत्र में पहला पद, अरहंत प्रभु का आता है।
अरिहंत प्रभु के सुमिरन से, सब दुःख संकट कट जाता है।।
अरहंत भावना कहती है, अरिहंत प्रभु का जाप करें।
अरिहंत देव के चरणों में, सब पूजन पाठ विधान करें।।

ॐ ह्रीं श्री अष्ट प्रातिहार्यानन्तचतुष्टयसहित अर्हद् भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री अर्हत् जिन हो जहाँ, सुख–शांति चहुँ ओर।
अमृत की वर्षा वहाँ, नाचे भवि मन मोर।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– चरण धरें प्रभुवर जहाँ, स्वर्ण कमल खिल जाय।
षट् ऋतु के बहु फूल ले, पुष्पांजलि चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– अरिहंत जिनेशा, नमत सुरेशा, गुण कीर्त्तन शत इन्द्र करें।
जयमाला गायें, माल चढ़ायें, भक्ति भाव से नृत्य करें।।

(जोगीरासा छंद)

जय–जय श्री अरिहंत जिनेश्वर, गुण अनंत के धारी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, जग मंगल उपकारी।।
समवरण के तुम हो स्वामी, इन्द्र खड़ें नित द्वारे।
जिनपे चौसठ चँवर ढुरें नित, वो अरिहंत हमारे।।1।।

केवली श्रुत केवली के सम्मुख, भव्य भावना भावे।
इन्हीं भावना के कारण वो, तीर्थंकर पद पावे।।
सम्यक् दर्शन ही प्राणी को, तीर्थंकर बनवाता।
त्रयविध सम्यग्दर्शन द्वारा, मिथ्यातम नश जाता।।2।।
चारों गति में समकित गुण के, हेतु अनेक बताये।
संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य सुदुष्टि पाये।।
एक बार समकित जो पाये, मोक्ष अवश वो पाये।
अर्हंतों के गुण अपनाकर, खुद अर्हत् बन जाये।।3।।
गोप सुभग अर्हत् भक्ति से, बने सुदर्शन ज्ञानी।
अकृतपुण्य जपें अरहंतं, बने मुनि महा ध्यानी।।
इंद्रभूति ने जिन अर्चा से, गणधर पद को पाया।
सेठ धनंजय ने भी इससे, सुत का जहर मिटाया।।4।।
श्री अरिहंत देव की श्रद्धा, अर्हत् सिद्ध बनाये।
अरहंतों के शाश्वत सुख को, अर्हंतों से पायें।।
चार घातिया कर्म नाशकर, चार चतुष्टय पायें।
चौंतिस अतिशय धारी जिन को, प्रातिहार्य चढ़ायें।।5।।
चारों पुरुषार्थों की सिद्धी, अर्हत् देव करायें।
ऐसे श्री अरिहंत नाथ की, हम भी भक्ति रचायें।।
रत्न रजत कंचन के सुन्दर, मंगल द्रव्य चढ़ायें
अरिहंतों को वंदन करके, 'आस्था' श्रेष्ठ बनाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य भक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छंद)

छत्तीस गुणधारी आचार्य महान् हैं।
चलते फिरते तीरथ ये भगवान हैं।।
दीक्षा शिक्षा दाता धर्म ध्वजा धरें।
इनका हम आह्वान करें पूजा करें।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

नीर क्षीर से गुरु पद हम प्रक्षालते।
गुरु हमारे तीन रोग परिहारते।।
गुरु के चरणों में आकर वंदन करें।
ढ़ोल मृदंग बजाकर हम अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कपूर मिलाकर चरणों में लगा।
गुरु पग रज से भक्तों का जीवन रंगा।। गुरु...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदवी पाने गुरु त्यागी बने।
गुरु चरणों के हम भी अनुरागी बने।। गुरु...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि से जीवन पुष्पों सम खिले।
बढ़े भाग्य से हमें गुरु के चरण मिले।। गुरु...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरगण भी जिनके तप की चर्चा करें।
उन गुरुओं की व्यंजन से अर्चा करें।। गुरु...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुरुवाणी पे हम सच्ची श्रद्धा करें।
करें आरती ज्ञान ज्योति गुरु से वरें।।
गुरु के चरणों में आकर वंदन करें।
ढ़ोल मृदंग बजाकर हम अर्चन करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पहुँचे गुरुवर कर्म नाश शिव लोक में।
धूप चढ़ा हम भी पहुँचे उस लोक में।। गुरु...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्ष लक्ष्मी वरने जो मुनिव्रत धरें।
सरस फलों से हम उनकी पूजन करें।। गुरु...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ चढ़ाया हमने गुरुवर आपको।
सदा करें गुरु अर्चा ये आशीष दो।। गुरु...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आचार्य भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बारह तप के अर्घ (दोहा)

अनशन तप को धारते, श्री आचार्य महान्।
छत्तीस गुण धर सूर्य का, करते भव्य विधान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनशन तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊनोदर तप धारते, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अवमौदर्य तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतपरिसंख्या तप धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यान तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस परित्याग सुतप धरें, श्री आचार्य महान्।
छत्तीस गुण धर सूर्य का, करते भव्य विधान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्याग तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्तशय्यासन धरें, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्यासन तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश सुतप धरें, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप को धरे, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय महातप को धरें, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विनय तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्त्यसुतप धरे, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वैय्यावृत्त्य तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते नित स्वाध्याय तप, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥10॥

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायोत्सर्ग सुतप धरें, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥11॥

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान तपस्या नित करें, श्री आचार्य महान्॥ छत्तीस...॥12॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यान तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ (दोहा)

उत्तम क्षमा धरें गुरु, क्षमा भाव के साथ।
हम उन गुरुओं को भजें, जोड़ें दोनों हाथ॥13॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म धर, करें मान का नाश।
ऐसे गुरु को हम भजें, करने मोह विनाश।।14।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव धर्म धर, कर माया का नाश।
उन गुरुओं को हम भजें, पाने ज्ञान प्रकाश।।15।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौच धर्म उत्तम धरें, हरें लोभ का पाप।
पाप रहित आचार्य का, करते हम नित जाप।।16।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म उत्तम धरें, कहें सत्य भगवान।
सत्य व्रती आचार्य ही, बन जाते भगवान।।17।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धारते, पीछी कमण्डल साथ।
ऐसे श्री आचार्य को, सदा झुकायें माथ।।18।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप पालें गुरु, कर इच्छा का रोध।
उन गुरुओं को हम भजें, पाने आतम बोध।।19।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धर्म उत्तम धरें, त्यागी जैनाचार्य।
उन आचार्यों को भजें, सिद्ध होय सब कार्य।।20।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धरम, धरें श्रेष्ठ सूरीश।
उनको हम पूजें सदा, इक दिन बने मुनीश।।21।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य उत्तम धरें, ब्रह्म स्वरूप दिखाय।
श्री आचार्य इसे धरें, उनकी भक्ति रचाय।।22।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक के अर्घ (दोहा)

सुख दुःख में समता धरे, धीर वीर गुरुराय।
उनको अर्घ चढ़ाय हम, सच्ची प्रीत लगाय॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिक आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवों की श्रेष्ठतम, स्तुति करें त्रिकाल।
उनको हम ध्यायें सदा, पूजें नित्य त्रिकाल॥24॥

ॐ ह्रीं श्री स्तव आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन आवश्यक करें, श्री आचार्य त्रिकाल।
प्रभु के लघुनंदन गुरु, वंदन उन्हें त्रिकाल॥25॥

ॐ ह्रीं श्री वंदना आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें गुरुवर प्रतिक्रमण, पाक्षिक वार्षिक आदि।
निज आतम को शुद्धकर, नाशें कर्मन व्याधि॥26॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यानी सूरिवर, करें नित्य नव त्याग।
उनको हम निशदिन भजें, कर उनसे अनुराग॥27॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय प्रति उत्सर्ग ही, कायोत्सर्ग कहाय।
ये कृतिकर्म गुरू करें, हम उनको नित ध्याय॥28॥

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार के अर्घ

(दोहा)

ज्ञानाचार धरें सदा, श्री आचार्य महान्।
उनकी हम पूजा करें, दो गुरु हमको ज्ञान॥29॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें दर्शनाचार नित, श्री आचार्य महान्।
उनको हम पूजें सदा, करने निज कल्याण॥30॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरें चारित्राचार जो, देते चारित दान।
सम्यक् चारित का हमें, दो गुरुवर वरदान॥31॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्राचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाचार धारण करें, करें तपस्या घोर।
तपधारी आचार्य ये, नाशें कर्मन् चोर॥32॥

ॐ ह्रीं श्री तपाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्याचार धरें गुरु, आत्म वीर्य प्रगटाय।
उनकी भक्ति हम करें, गुरु सम शक्ति जगाय॥33॥

ॐ ह्रीं श्री वीर्याचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ

(दोहा)

मनोगुप्ति धारी गुरु, मन में रखें न चाह।
उन गुरुओं को हम भजें, मन में रख उत्साह॥34॥

ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन गुप्ति पालें गुरु, मुख अमृत बरसाय।
उन गुरुओं को हम भजें, आठों द्रव्य चढ़ाय॥35॥

ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय गुप्तिधारी गुरु, तन का छोड़ें मोह।
उन गुरुओं को पूजकर, नाश करें हम मोह॥36॥

ॐ ह्रीं श्री कायगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

आचार्य भक्ति भावना को अर्घ चढ़ायें।
उनके चरण में बैठ अपना भाग्य जगायें।।
सन्मार्ग दिवाकर गुरु आचार्य हमारे।
हम झूम-झूम भक्ति करें उनको पुकारें।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जब तक गुरु संसार में, रहें चन्द्र रवि आग।
आचार्यों की भक्ति से, जागे मम सौभाग्य।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पंकज भी खिलते वहाँ, जहाँ गुरु नित होय।
गुरु के पावन चरण में, वो भी पुलकित होय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- श्री आचार्य मुनीन्द्र की, गाऊँ मैं जयमाल।
वे सद्गुण की खान हैं, करते मालामाल।।

(जोगीरासा छंद)

छत्तीस मूलगुणों के धारी, पंचाचार विहारी।
मुनियों के आचार्य गुरु के, चरणन् ढ़ोक हमारी।।
चार संघ के नायक गुरुवर, शिक्षा दीक्षा दाता।
लालन पालन करने वाले, जैनागम के ज्ञाता।।1।।

द्वादश तप का पालन करते, क्षमा आदि गुण धारें।
उत्तम क्षमा मृदु आर्जव से, क्रोधादिक परिहारें।।

शौच सत्य संयम के आगे, पाप नहीं रुक पाते।
इनकी त्याग तपस्या को लख, पापी भी झुक जाते।।2।।

तप है उत्तम त्याग अनूपम, आकिंचन व्रत प्यारा।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, ब्रह्मचर्य व्रत न्यारा।।
राग-द्वेष तज समता धारें, षट् आवश्यक पालें।
दशविध भक्ति में निशदिन वे, तत्पर रहने वाले।।3।।

कभी वंदना संस्तव करते, तन से ममता छोड़ें।
बाईस परिषह जेता गुरुवर, कभी ना समता छोड़ें।।
नाना विध उपसर्ग सहन कर, हो मेरुवत ध्यानी।।
धीर वीर गंभीर गुरु की, मुद्रा लगे सुहानी।।4।।

चंद्रगुप्त ने भद्रबाहु की, ऐसी भक्ति रचायी।
जंगल में आहार कराते, सुरगण बने सहायी।।
श्रुतसागर मुनि गुरु आज्ञा से, ऐसा ध्यान लगाये।
चारों मंत्री वार करें पर, मुनि को मार न पाये।।5।।

घाति अघाति कर्म नशाने, नौका बन वे तारें।
रत्नत्रय है भूषण जिनका, त्रय गुप्ति जो धारें।।
सकल संघ से सहित गुरुवर, मोक्षमार्ग के नेता।।
'आस्था' उनको निशदिन पूजे, बनने कर्म विजेता।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बहुश्रुत भक्ति भावना पूजा

(गीता छंद)

पाठक ऋषि मुनिराज का, पढ़ना पढ़ाना काम है।
शिक्षा सदा दें शिष्य को, उनको विशेष प्रणाम है।।
पच्चीस गुणधारी गुरु, उनका यहाँ आह्वान है।
ज्ञानी गुरु की अर्चना, देती हमें श्रुतज्ञान है।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सुन्दर घट में जल लायें, गुरु पद प्रक्षाल करायें।
छम-छम-छम घुंघरु बाजे, भक्तों का मनवा नाचे।।
बहुश्रुत भक्ति को भायें, पाठक ऋषिवर को ध्यायें।
जो पूजा श्रेष्ठ रचायें, वो तीर्थंकर बन जायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन् गंध लगायें, गुरु पाप ताप विनशायें।
पाठक गुरुवर को पूजें, उनका नभ में जय गूँजे।। बहुश्रुत...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का क्षय करते जो, अक्षय पदवी वरते वो।
श्वेताक्षत पुंज चढ़ायें, अक्षय अखंड पद पायें।। बहुश्रुत...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों सा मन गुरु धारें, हम आये उनके द्वारे।
जल थल के कुसुम चढ़ायें, मन बाग-बाग हो जायें।। बहुश्रुत...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रबड़ी व खीर पकौड़ी, पेड़ा लड्डू व कचौड़ी।
गुरुवर को नित्य चढ़ायें, हम क्षुधा कर्म विनशायें।। बहुश्रुत...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चमके ज्यों चाँद सितारे, दीपों संग आये द्वारे।
हे ज्ञान सूर्य ! गुरुदेवा, मिथ्यात्व तिमिर हर लेवा।।
बहुश्रुत भक्ति को भायें, पाठक ऋषिवर को ध्यायें।
जो पूजा श्रेष्ठ रचायें, वो तीर्थंकर बन जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु शुद्ध बुद्ध पद पायें, उनकी हम भक्ति रचायें।
प्रतिपल उनके गुण गायें, संग सुरभित धूप चढ़ायें।। बहुश्रुत...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आई भक्ति की बेला, गुरु के दर लगता मेला।
हम लाये श्रीफल केला, गुरु हर लो कर्म झमेला।। बहुश्रुत...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरादिक द्रव्य सजायें, भावों से अर्घ चढ़ायें।
पाठक बहुश्रुत विज्ञानी, गुरु हमें बनाओ ज्ञानी।। बहुश्रुत...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुश्रुत भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

मुनियों के आचार्य को, कहता आचारांग।
इसकी हम पूजा करें, पाने आचारांग।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचारांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय धर्म व्यवहार को, कहता सूत्र कृतांग।
इसकी पूजा हम करें, जानें सूत्र कृतांग।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सूत्र कृतांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर वस्तु स्थान को, कहता स्थानांग।
अष्ट द्रव्य को हाथ ले, पूजें स्थानांग।।3।।

ॐ ह्रीं श्री स्थानांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र समवाय को, कहता समवायांग
नीरादिक वसु द्रव्य ले, पूजें समवायांग।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समवायांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ हजार प्रश्न का, उत्तर दे यह अंग।
व्याख्याप्रज्ञप्ति भजें, पानें प्रभु का संग।।5।।

ॐ ह्रीं श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के वैभव को कहे, ज्ञातृधर्म कथांग।
तीर्थंकर प्रभु को भजें, जाने ज्ञातृ कथांग।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञातृधर्मकथांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपासकाध्ययनांग में, मिले श्रावकाचार।
उसी अंग को हम भजें, समझे वह आचार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपासकाध्ययनांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के काल में, मुनिवर सह उपसर्ग।
अन्तकृद्दशांग को, चढ़ा रहे हम अर्घ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अंतकृत्दशांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग अनुत्तरपाद में, वर्णित मुनि उपसर्ग।
उन मुनियों व अंग को, चढ़ा रहे हम अर्घ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तरोपपादिकदशांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्न व्याकरण अंग भी, कहे कथायें चार।
उसी अंग को हम भजें, नष्ट होय गति चार।।10।।

ॐ ह्रीं श्री प्रश्न व्याकरणांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म फलों को कह रहा, श्री विपाक सूत्रांग।
अर्घ चढ़ायें भाव से, जाने श्रुत सर्वांग॥11॥

ॐ ह्रीं श्री विपाकसूत्रांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यय उत्पाद व ध्रौव्य को, कहे पूर्व उत्पाद।
बहुश्रुत भक्ति भावना, कहती नय उत्पाद॥12॥

ॐ ह्रीं श्री उत्पाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूर्व में, द्रव्य तत्व का ज्ञान।
पूजें हम इस अंग को, हो हमको सद्ज्ञान॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रायणी पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपो द्रव्य गुण वीर्य को, कहे वीर्यानुवाद।
स्वात्म दृष्टि हमको मिले, छोड़ें वाद-विवाद॥14॥

ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति प्रवाद दे, सप्त भंग का ज्ञान।
उसको पूजें आज हम, जानें श्रुत विज्ञान॥15॥

ॐ ह्रीं श्री अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ ज्ञान को जो कहें, वो है ज्ञान प्रवाद।
हम पूजें इस अंग को, पाने ज्ञान प्रवाद॥16॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दों का वर्णन कहे, दस प्रकार के सत्य।
सत्य प्रवाद को पूज हम, छोड़ें सर्व असत्य॥17॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म प्रवाद पूर्व में, निज स्वरूप का ज्ञान।
उसका करें विधान हम, करने निज कल्याण॥18॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रवाद पूर्व ये, कहे उदय व बंध।
कर्म काटने हम करें, पूजा भक्ति प्रबंध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान यही कहे, करो यथाक्रम त्याग।
सर्व द्रव्य ले हम जजें, हो प्रभु से अनुराग॥20॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु विद्या है सात सौ, महा पाँच सौ होय।
उसकी अर्चा हम करें, आत्म सिद्धि मम होय॥21॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक नाथ के, करते नित कल्याण।
भज कल्याण प्रवाद हम, करें आत्म कल्याण॥22॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औषध विद्या दे रहा, श्रुत प्राणानुवाद।
इसकी ईज्या हम करें, मेटें रोग प्रवाद॥23॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीत कला संगीत को, कहता क्रिया विशाल।
इसकी अर्चा हम करे, जानें क्रिया विशाल॥24॥

ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशाल पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कला बहत्तर को कहे, लोकबिन्दु श्रुत सार।
पाठक गुरु सब पाठ कर, करें भवार्णव पार॥25॥

ॐ ह्रीं श्री लोक बिन्दुसार पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

बहुश्रुत धनी मुनीश का, सम्मान हम करें।
पाठक ऋषि की भक्ति से, सद्ज्ञान हम वरें॥
इस भावना को भायें, ज्ञान ज्योति जलायें।
सुज्ञान रत्न पाने, अष्ट द्रव्य चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैनागम के सूत्र को, तीन गुप्ति से धार।
निर्मल जल से हम करें, प्रभु चरणों में धार॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– पाने बहुश्रुत ज्ञान को, दृढ़ श्रद्धा मन धार।
प्रभु के पद में हम करें, सुमनाजंलि मनहार॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– बहुश्रुत की भक्ति, देती मुक्ति, सम्यक्ज्ञान प्रकाश करे।
मिथ्यात्व नशाये, ज्ञान जगाये, उसकी हम जयमाल पढ़ें॥

(काव्य छंद)

बहुश्रुत भक्ति रचाय, बहुविधि पुण्य कमायें।
ज्ञानी गुरु के पास, सूत्र ज्ञान के पायें॥
जिनवाणी है शास्त्र, उसको गुरु बतायें।
बिना गुरु लवलेश, सूत्र समझ न आये॥1॥

अनेकांत का सार, स्याद्वाद कहलाता।
सत्य अहिंसा रूप, जैनधर्म कहलाता॥
जीव मात्र से प्रेम, करना सीखो प्राणी।
दया धरम का सार, कहती है जिनवाणी॥2॥

त्यागें पाँचों पाप, सप्त व्यसन को छोड़ें।
पंच उदम्बर त्याग, त्रय मकार हम छोड़ें॥
आठ गुणों को पाल, अष्ट अंग को धारें।
देव–शास्त्र–गुरु तीन, इन पे श्रद्धा धारें॥3॥

पाप बंध के हेतु, प्रभु ने पाँच बताये।
मिथ्या अविरति आदि, चारों गति भटकाये॥

हो प्रमाद आधीन, प्राणी पाप कमाता।
पंचेन्द्रिय में लीन, फूला नहीं समाता।।4।।

पापारंभ कषाय, करें जीव अज्ञानी।
करके चार कषाय, भूले वो जिनवाणी।।
जाने व अनजान, भव का भ्रमण बढ़ाये।
अब हम तज अज्ञान, बहुश्रुत भक्ति रचायें।।5।।

द्वादशांग धर श्रेष्ठ, पाठक बहुश्रुत ज्ञानी।
अंग चतुर्दश इष्ट, अंग भौम विज्ञानी।।
गुरु का सन्निध पाय, सूत्र ज्ञान के पायें।
ज्ञानदीप की ज्योत, हम निज में प्रगटायें।।6।।

कोंडेश गोपाल, बहुश्रुत भक्ति रचायें।
कुंदकुंद आचार्य, बहुविध शास्त्र रचायें।।
नगर सेठ सुकुमाल, सुनते ही जिनवाणी।
सहे घोर उपसर्ग, बनकर मुनिवर ध्यानी।।7।।

मन में धर बहुमान, जिनवाणी अपनायें।
आगम का कर ज्ञान, सच्ची भक्ति जगायें।।
'आस्था' से हम मात!, समिति गुप्ति अपनाये।
बहुश्रुत भक्ति विचार, केवलज्ञान जगायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रवचन भक्ति भावना पूजा

(दोहा)

प्रवचन भक्ति भावना, सम्यक् दीप जलाय।
अर्हन्तों की पा कृपा, मिथ्या तिमिर नशाय।।
कर में कुसुम सजाय के, करते हम आह्वान।
मन-वच-तन कर जोड़ के, प्रभु को करें प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

इन्द्र शची बनकर करें, प्रभुवर का अभिषेक।
अर्हंतों के चरण में, अपना माथा टेक।।
अर्हंतों के वचन पे, करते हम श्रद्धान।
जिनवर की अर्चा रचा, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रज पाने हम चले, समवशरण में आज।
प्रभु पद में चंदन लगा, सिद्ध करें सब काज।। अर्हंतों के...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित मनोहर धवल ले, अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाय।
अर्हंतों की भक्ति से, अक्षय पद मिल जाय।। अर्हंतों के...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि प्रभु पे करें, स्वर्गों के सुर देव।
हम पुष्पों से पूजते, भाग्य जगे स्वयमेव।। अर्हंतों के...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर के दरबार में, लगे भूख ना प्यास।
षट्रस व्यंजन थाल ले, आये प्रभु के पास।। अर्हंतों के...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी आप हैं, दे दो सम्यक् ज्ञान।
करें आरती नाथ की, मिटे तिमिर अज्ञान।।
अर्हंतों के वचन पे, करते हम श्रद्धान।
जिनवर की अर्चा रचा, करते हम गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध परमात्मा, अविनाशी चिद्रूप।
अष्ट कर्म को नाशने, तुम्हें चढ़ायें धूप।। अर्हंतों के...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष सुफल की कामना, भव्य जीव नित भाय।
हरे-भरे फल से सदा, प्रभु की भक्ति रचाय।। अर्हंतों के...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन भक्ति में झूमता, मुख में प्रभु के गीत।
श्रेष्ठ थाल में अर्घ ले, करें प्रभु से प्रीत।। अर्हंतों के...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

ग्यारह अंग सहित भजें, प्रवचन चौदह पूर्व।
पूजें प्रवचन भक्ति को, पायें ज्ञान अपूर्व।।1।।

ॐ ह्रीं श्री एकादशांग चतुर्दश पूर्व सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामायिक विधि को कहे, प्रथम प्रकीर्णक भाव।
इसकी हम पूजा करें, पाने समता भाव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबीस की, स्तुति करें त्रिकाल।
वसुविधि द्रव्य सजाय के, पूजा करें त्रिकाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिस्तव प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक प्रभु की स्तुति, वंदन भाव कहाय।
ऐसा वंदन हम करें, प्रभु शीघ्र मिल जाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वंदना प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या के सब दोष को, प्रतिक्रमण विनशाय।
प्रतिक्रमण की अर्चना, हमको पार लगाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहता विनय स्वरूप को, विनय प्रकीर्णक नाम।
विनय भाव से हम भजें, करते सदा प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वैनयिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित नैमित्तिक हर क्रिया, बतलावे कृतिकर्म।
कृतिकर्म को हम भजें, ये ही सच्चा धर्म।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कृतिकर्म प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवैकालिक कह रहा, मुनियों का आचार।
दशवैकालिक हम भजें, पाने श्रमणाचार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दशवैकालिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तराध्ययन विशाल है, देता है उपदेश।
परिषह वा उपसर्ग की, कहते विधि जिनेश।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तराध्ययन प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे कल्प व्यवहार श्रुत, करो आचरण योग्य।
पूजें हम इस कल्प को, धारण करने योग।।10।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पव्यवहार प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णित कल्प्याकल्प्य में, भक्ष्याभक्ष्य आहार।
जैसा भोजन हम करें, वैसा हो आचार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पाकल्प प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग पुरुषों का आचरण, महाकल्प दर्शाय।
महापुरुष बनते वही, जिसको धर्म सुहाय।।12।।

ॐ ह्रीं श्री महाकल्प प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ निकाय के देव का, जो उपपाद बताय।
पुण्डरीक वह शास्त्र है, पूजें मन वच काय।।13।।

ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के सब जन्म को, कहे महापुण्डरीक।
करो सदा सत्कर्म को, देता ऐसी सीख।।14।।

ॐ ह्रीं श्री महापुण्डरीक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष को जो कहे, वो निषद्यका जान।
प्रायश्चित्त विधि कहे, पूजें धर सम्मान।।15।।

ॐ ह्रीं श्री निषद्यका प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

बारह सभा के मध्य खिरे जिन की देशना।
जिनके चरण में राग द्वेष होवे लेश ना।।

सत्यार्थ वाणी लोक में जिनवर की गूँजती।
जिनवाणी को ही सर्व सभा नित्य पूजती।।

ॐ ह्रीं श्री अंग प्रविष्ट अंग बाह्य श्रुत प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता

जल झारी लाये, धार करायें, सर्व लोक में शांति रहे।
पुष्पों की वृष्टि, सुखमय सृष्टि, पुष्पों सा मन खिला रहे।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– **जिसने जिनवाणी सुनी, उसका पुण्य विशाल।**
गायें प्रवचन भक्ति की, सुन्दर यह जयमाल।।

(शेर छंद)

जिनराज का शुभ नाम ही सुख शांति दिलाये।
श्रद्धा से नाथ आपको हम शीश झुकायें।।
शासन अमर रहे सदा जिनेन्द्र आपका।
चलता रहेगा विश्व में सुनाम आपका।।1।।

जिनराज की शरण में आके देशना सुने।
जिनवाणी सुनकर भक्त मोक्ष राह को चुने।।
हे नाथ ! हमको इष्ट वस्तु दान दीजिये।
संसार के दुःखों से यू उबार लीजिये।।2।।

भयभीत प्राणियों ने नाथ आन पुकारा।
तीनों जगत् में आप सा ना बंधु हमारा।।
तुम नाथ अनाथों के हमें दे दो सहारा।
दरबार साँचा श्रेष्ठ ज्येष्ठ एक तिहारा।।3।।

धरसेन सूरि शास्त्र व जिन धर्म बचायें।
मुनि युग्म को श्रुतज्ञान दे बहु शास्त्र रचायें।।
निकलंक ने इसके लिये बलिदान दे दिया।
अकलंक ने शास्त्रार्थ जीत ज्ञान दे दिया।।4।।

जिनवर ! हमारा समय पाद मूल में बीते।
सद्ज्ञान का प्रसाद भक्त पुण्य से पीते।।
हे नाथ ! आपके समक्ष पाप नशायें।
कर्मों को जीतने ये भक्त ध्यान लगायें।।5।।

जिनराज के समान और कोई ना गुरु।
आशीष लेके नाथ से जीवन करें शुरू।।
गुरुओं के गुरु आपको वन्दन है बार-बार।
'आस्था' भी इसी पुण्य से जाये त्रिलोक पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा

(गीता छंद)

जिनदेव ने सत्पथ दिया, जिन भक्ति भव से तारती।
कर्त्तव्य पालन नित करो, कहती यही माँ भारती।।
आवश्यकापरिहाणि का, हम पुष्प से थापन करें।
आह्वान करते भाव से, पूजा करें शिवपुर वरें।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

गंगा सिंधु का नीर, कलशों में लाये।
प्रभु नाम हरे भव पीर, चरणों में आये।।
त्रय रोग मिटे प्रभु द्वार, रत्नत्रय पायें।
हम आये प्रभु के द्वार, प्रभु के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव के संचित पाप, भव-भव भटकाये।
हम करें सतत प्रभु जाप, आतप नश जाये।।
चंदन दे शांति अपार, चंदन घिस लायें।। हम आये..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय दानी जगदीश, अक्षय पद देना।
हे तीन लोक के ईश, शाश्वत सुख देना।।
लाये मुक्ता मनहार, तव शरणा आये।। हम आये..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मम हृदय कमल खिल जाय, प्रभु के दर्शन से।
दर्शन विशुद्धि मिल जाय, प्रभु की पूजन से।।
सुन्दर पुष्पों का हार, प्रभु चरणन् लायें।। हम आये..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टादश दोष सताय, जग के प्राणी को।
अरहंत उन्हें विनशाय, बनते ज्ञानी वो।।
पकवान अनेक प्रकार, प्रासुक हम लाये।
हम आये प्रभु के द्वार, प्रभु के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवलज्ञानी का ज्ञान, त्रिभुवन अवलोके।
है पाप बड़ा अज्ञान, चहुँगति में रोके।।
दीपोत्सव कर प्रभु द्वार, ज्ञान निधि पायें।। हम आये..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रक पावक में खेय, कर्मों को नाशें।
जिनवर की शरणा लेय, जिनगुण के प्यासे।।
हरने कर्मों की मार, जिनवर को ध्यायें।। हम आये..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूंगीफल आम अनार, श्रीफल हम लाये।
पाने मुक्ति उपहार, प्रभुवर को ध्यायें।।
अनुपम उत्तम रसदार, भर-भर फल लायें।। हम आये..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम द्रव्य भाव के साथ, पूजा करते हैं।
हम अर्घ चढ़ा नत माथ, कीर्त्तन करते हैं।।
साँचा है प्रभु का द्वार, भक्त हृदय गाये।। हम आये..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आवश्यकापरिहाणि भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

सामायिक समभाव से, करते मुनि त्रिकाल।
आवश्यकापरिहाणि को, पूजें भक्त त्रिकाल।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक स्तवन वही, करे प्रभु का पाठ।
प्रभु के भक्ति पाठ से, मिले मोक्ष का ठाठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री स्तवन आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक प्रभु की वंदना, चरणन् माथ झुकाय।
अभिवंदन जिन नाथ को, मन क्च तन से ध्याय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वंदना आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक है प्रतिक्रमण, करें पाप का नाश।
आवश्यकपरिहाणि ये, देती पुण्य प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान अवश करें, रहें त्याग के भाव।
त्याग भावना का न हो, हममें कभी अभाव।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28 कृतिकर्म में, करते कायोत्सर्ग।
णमोकार नोबार जप, होता कायोत्सर्ग।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई)

षट् आवश्यक जो नित पाले, मोक्ष मार्ग के वे रखवाले।
आवश्यक हम अवश करेंगे, समता धर शिव राह वरेंगे।।
कभी प्रमादी नहीं बनेंगे, दोषों का परिहार करेंगे।
प्रभु अर्चा हम सदा करेंगे, भक्ति से भगवान बनेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- क्षीरोदधि के नीर से, करें प्रभु पे धार।
सर्व लोक में शांति हो, सुखी रहे संसार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- चुन-चुनकर लायें सुमन, चढ़ें प्रभु पद फूल।
प्रभु चरणों के फूल ही, कहलाती पग धूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- षट् आवश्यक पालते, ऋषि मुनि वा यतिराज।
उनकी यह जयमाल पढ़, पायें शिवपुर राज।।

(शंभु छंद)

जय-जय गुरुवर जय-जय मुनिवर, जय बोलों सारे ऋषियों की।
जय-जय समता धर साधक की, जय बोलों त्यागी यतियों की।।
षट् आवश्यक ये गुरु पालें, कर्मों से छुटकारा पाने।
ऐसे सूरि पाठक मुनि का, गुण गाते हम सद्गुण पाने।।1।।
पहला आवश्यक सामायिक, जो समता भाव जगाता है।
सब राग-द्वेष क्रोधादिक को, अंदर से दूर भगाता है।।

चौबीसों प्रभु की स्तुतियाँ, श्रद्धा पूर्वक गुरुराज करें।
वंदन करते-करते प्रभु को, वे निश्चय से शिवराज वरें।।2।।

प्रतिक्रमण करें पापों को तज, निंदा गर्हा वो नित करते।
नित प्रत्याख्यान करें साधु, जिनगुण पाने तत्पर रहते।।
काया से ममता मोह तजे, णवकार मंत्र को जपते हैं।
जो ध्यान मनन चिंतन करते, उन गुरुओं को हम भजते हैं।।3।।

मेरु सम अटल रहें गुरुवर, परिषह जेता शुचि योग धरें।
रवि के सम्मुख मुख मुद्राकर, आतापन आदिक योग धरें।।
इनकी कठोर चर्या लखकर, वैरी प्राणी सम भाव धरें।
षट् आवश्यक पालन करके, ऐसे मुनिवर शिवलाभ वरें।।4।।

चक्रीश भरत छह आवश्यक, पालन कर निज उत्थान किया।
उत्तम श्रावक मुनि व्रत पाकर, क्षणभर में सब जग जान लिया।।
श्रीराम और सीता सति ने, वन में छह आवश्क पालें।
उससे हर संकट को जीता, मुनि बन वसु कर्म जला डालें।।5।।

हम इनकी अर्चा करते हैं, गुरु नाम मंत्र को जपते हैं।
समता धारी श्री गुरुवर से, समता अमृत रस वरते हैं।।
दश धर्म धरें त्रय गुप्ति वरें, गुणगान गुरु का हम गायें।
गुरुवर पे 'आस्था' करके हम, संसार दुःखों से तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मार्गप्रभावना भावना पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पूर्ण करेंगे नाथ कामना, उत्तम भाव हृदय धारें।
जिनवर जैन धरम की जय हो, लगा रहें प्रभु के नारे॥
मोक्षमार्ग के नेता के दर, पुष्पों की थाली लाये।
आओ आओ भगवन् मेरे, आह्वानन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जन्म जरा मृत नाश हो, लाये निर्मल नीर।
रत्नत्रय निधि दान दो, हरो नाथ भव पीर॥
प्रभु पूजा से जागती, भक्तों की तकदीर।
मन मंदिर में बस गई, जिनवर की तस्वीर॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शीतलता करे, हरता भव का ताप।
जिन चरणों की गंध से, मिटते सारे पाप॥ प्रभु पूजा...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले नर्तन करें, मिले प्रभु आशीष।
अक्षय सुख जिससे मिले, ऐसा पद दो ईश॥ प्रभु पूजा...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बकुल मालती मोगरा, कमल कुंद कचनार।
जिन पद में अर्पण करें, सुमन सुगंधित हार॥ प्रभु पूजा...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

खीर मलाई वा पुड़ी, सजा जलेबी सेव।
क्षुधा रोग को नाशने, पूजा करें सदैव॥ प्रभु पूजा...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिमय घृत के दीप ये, चम-चम करते जाय।
उनको थाली में सजा, प्रभु की आरती गाय।।
प्रभु पूजा से जागती, भक्तों की तकदीर।
मन मंदिर में बस गई, जिनवर की तस्वीर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जला हम अग्नि में, कर्म समूह नशाय।
तीन लोक के नाथ की, अतिशय भक्ति रचाय।। प्रभु पूजा...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन पूजन से मोक्ष हो, ये आगम की बात।
शिवफल हित जगदीश को, पूजें हम दिन-रात।। प्रभु पूजा...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो पद पाया आपने, वीतराग भगवान।
वो ही पद हम भी वरें, करके अर्घ प्रदान।। प्रभु पूजा...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मार्गप्रभावना भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

प्रज्ञा मार्ग प्रभावना, ज्ञानी हमें बनाय।
उत्तम मार्ग प्रभावना, धर्म प्रभाव दिखाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से मार्ग प्रभावना, तप की वृद्धि कराय।
इसकी ये आराधना, तप की प्राप्ति कराय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तपसा मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानतुंग आदि गुरु, कवित्व शक्ति दिखाय।
करके धर्म प्रभावना, सबको धर्म सिखाय॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कवित्वेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ प्रभावना के लिये, करें गुरु व्याख्यान।
उनकी सम्यक् व्याख्या, दे सम्यक् आख्यान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री व्याख्यानेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया भट्ट अकलंक ने, छह महीने तक वाद।
करके मार्ग प्रभावना, मेटा सर्व विवाद॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वादेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत का संरक्षण करे, ग्रन्थोद्धार कराय।
करते मार्ग प्रभावना, श्रुत पंचमी मनाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रंथोद्धारेण मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा सुन्दर बना, मंदिर तीर्थ बनाय।
उनकी अतिशय भक्ति कर, मार्ग प्रभाव बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री जिनप्रतिमा निर्माणरूप मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का पंचकल्याण भी, अति उछाव से होय।
पंच परावर्तन मिटे, वह प्रभावना होय॥8॥

ॐ ह्रीं श्री जिन प्रतिमा प्रतिष्ठाकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊँ संघों की यात्रा, जो श्रावक करवाय।
करके धर्म प्रभावना, निज का भ्रमण मिटाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री संघ तीर्थ यात्राकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा भव्य विधान कर, गजरथ भव्य चलाय।
जैनधर्म जयवंत हो, यही भावना भाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अनेकपूजा-विधानकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई)

सुप्रभावना मार्ग दिखाये, धर्म किरण घर-घर पहुँचाये।
अंग आठवाँ यह कहलाये, सर्व जगत् में जिनमत छाये।।
जिनशासन जिनगुरु को ध्यावें, यशकीर्ति रवि सम फैलावें।
प्रभु को उत्तम द्रव्य चढ़ायें, पाप नशे बहु पुण्य कमायें।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

मंगल जल के कुंभ लिये हम हाथ में।
विश्व शांति की करें कामना साथ में।।
पुष्पों की पुष्पाञ्जलि जो भविजन करें।
उस प्राणी की पूजा सुरपति भी करें।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- रवि शशि ज्यों चमके, नभ में दमके, युगों-युगों जिनधर्म रहे।
जिनधर्म दिवाकर, ज्ञान प्रभाकर, जयमाला मम कण्ठ रहें।।

(गीता छंद)

उत्तम सुमार्ग प्रभावना, हरती सदा दुर्भावना।
मन में करें सद्भावना, होवे सुधर्म प्रभावना।।

सम्यक्त्व की सोपान है, मिथ्यात्व तम हरती घना।
जिनधर्म की कीर्ति बढ़े, करते यही हम कामना।।1।।

हरिषेण चक्री रथ चला, की धर्म की प्रभावना।
अकलंक वज्रकुमार ने, की श्रेष्ठ धर्म प्रभावना।।
मैना मनोवती चंदना, सतियों ने की प्रभावना।
सीता ने शील सुधर्म से, की लोक सिद्ध प्रभावना।।2।।

तीनों जगत् में यश रहे, हे नाथ ! प्रभुवर आपका।
संसार में बस एक ही, डंका बजे प्रभु नाम का।।
तन मन वचन धन से करें, सब भव्य धर्म प्रभावना।
मंदिर बनावे दान दे, उत्सव करें मन भावना।।3।।

चतुः संघ की सेवा करें, और द्रव्य खर्चें तीर्थ में।
निज शक्ति के अनुसार ही, तन को तपाये तीर्थ में।।
जिनदेव की आज्ञा धरें, निज देह से ममता तजें।
मन से भजें प्रभु नाम को, शुचि ज्ञान मय आतम भजें।।4।।

भवि दान ऐसा दीजिये, अचरज करे संसार ये।
सत न्याय नीति को निभा, बढ़ते चलें जिनमार्ग पे।।
जिनराज की अर्चा करें, पूजा करें उत्साह से।
त्रयगुप्ति वर समता धरें, 'आस्था' धरें शिवराह पे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रवचन वात्सल्य भावना पूजा

(शंभु छंद)

श्रीपति जिनवर की वाणी ही, मंगल प्रवचन कहलाती है।
गणधर गुंथित प्रभु की वाणी, वो जिनवाणी कहलाती है।।
करुणामय अमृत पीने हम, आह्वान उन्हीं का करते हैं।
स्वागत करते हम ईश्वर का, कर में कमलों को भरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

सोने चाँदी माणिक मोती, मिट्टी धातु के कलश भरें।
क्षीरोदधि के तीर्थोदक से, हम श्री जिन का अभिषेक करें।।
प्रवचन वात्सल्य सिखाता है, जो प्राणी मात्र से प्रेम करें।
वो ही तीर्थंकर बनते हैं, हम उनका पूजन पाठ करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित कर्पूर मिला, नाना प्रकार चंदन लायें।
प्रभु के चरणों में गंध लगा, संसार ताप हम विनशायें।। प्रवचन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धवल अखंडित मोती ले, श्री जिनवर की अर्चा करते।
हे नाथ ! तुम्हारे पद युग की, अभिषेक सहित पूजन करते।। प्रवचन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन पर प्रभुवर शोभें, केवल लक्ष्मी के जो स्वामी।
सुन्दर ताजे कमलों को ले, हम पूज रहे अन्तर्यामी।। प्रवचन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु के चरणों में रहता, उसको ना भूख सताती है।
जो पूजे षट्रस व्यंजन से, उसकी व्याधि मिट जाती है।।
प्रवचन वात्सल्य सिखाता है, जो प्राणी मात्र से प्रेम करें।
वो ही तीर्थंकर बनते हैं, हम उनका पूजन पाठ करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिमय रत्नों के दीपों से, जिनवर की आरती गाते हैं।
केवलज्ञानी श्री जिनवर से, कैवल्य ज्योत्सना पाते हैं।। प्रवचन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अगर तगर चंद्रक अंबर, जिन सन्मुख धूप चढ़ाते हैं।
पावक में धूप चढ़ाने से, सम्पूर्ण कर्म जल जाते हैं।। प्रवचन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा के फल से ही प्राणी, सम्पूर्ण सुखों को पाते हैं।
हम मोक्ष महाफल पाने हित, प्रभु को फल थाल चढ़ाते हैं।। प्रवचन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वात्सल्य भावना प्रवचन की, उत्कृष्ट श्रेष्ठ प्रभु की वाणी।
आठों द्रव्यों को लेकर के, सब पूजें प्रभु को श्रद्धानी।। प्रवचन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रवचन वात्सल्य भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

देख साधु का रूप, वात्सल्य भाव जगायें।
इनकी भक्ति विशेष, अतिशय पुण्य बढ़ायें।।

प्रवचन वत्सल भाव, इसकी करते पूजा।
इसको हमने आज, अष्ट द्रव्य से पूजा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री साधु-स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात आर्यिका श्रेष्ठ, आठबीस गुण धारें।
उनसे गुण अनुराग, करें आज हम सारे।। प्रवचन..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आर्यिका स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुल्लक श्रावक श्रेष्ठ, ग्यारह प्रतिमा धारें।
इनसे करके नेह, हम जग मोह निवारें।। प्रवचन..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रावक स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात क्षुल्लिका पूज्य, ग्यारह प्रतिमा धारें।
इनको अर्घ चढ़ाय, जग व्यामोह निवारें।। प्रवचन..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्राविका स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

वात्सल्य प्रवचन भावना, वात्सल्य गुण सिखला रही।
करुणा दया मन में धरो, माँ शारदा बतला रही।।
उनको विनय उत्साह से, पूर्णार्घ अर्पण कर रहे।
हम भी प्रभु तुम सम बने, यह प्रार्थना नित कर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विध संघ वत्सलत्व रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्हंतों को जल चढ़ा, पायें शांति अपार।
प्रवचन अर्हत नाथ के, जग में मंगलकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पारिजात मंदार ये, पुष्पों की दे भेंट।
यही प्रार्थना आप से, नाशें कर्मन खेट।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा- प्रवचन वत्सल भाव, जिनवर की वाणी भली।
पाने आत्म स्वभाव, उसकी जयमाला पढ़ें।।

(शंभु छंद)

हे नाथ ! तुम्हारी वाणी को, हम श्रद्धा से अपनाते हैं।
उस वाणी पे श्रद्धा करके, समकित गुण पुष्ट बनाते हैं।।
हे मैय्या ! तेरे लाल बड़े, उनकी गुण गाथा गाते हैं।
तीर्थंकर के लघुनंदन को, आस्था से शीश झुकाते हैं।।1।।

ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनि यतिवर, अनगार श्रमण सूरिनायक।
ऋद्धि-सिद्धी धारी गुरुवर, सर्वोच्च श्रेष्ठ विद्या दायक।।
जिनवाणी माँ की रक्षा में, जीवन अपना बलिदान किया।
वात्सल्य दिखा साधर्मी पर, उसका सच्चा उत्थान किया।।2।।

धरसेन गुरु ने आगम को, विधिवत मुनियों को सिखलाया।
दो शिष्यों को बुलवा करके, श्रुतज्ञान वृक्ष को फैलाया।।
श्री पुष्पदंत गुरु भूतबली, जिनने की है श्रुत की सेवा।
वो पर्व पंचमी श्रुत का है, पूजें उसको सुर नर देवा।।3।।

श्री कुंदकुंद आचार्य देव, लिख डाले नाना ग्रंथ जहाँ।
उनके आगम को पढ़ने से, मिलता है मुक्ति पंथ यहाँ।।
अकलंक देव आचार्य श्रेष्ठ, जिनवाणी माँ को ध्याते हैं।
निकलंक भाई से भी पहले, श्रुत रक्षा में मिट जाते हैं।।4।।

गुरु समन्तभद्राचार्य श्रेष्ठ, जिनमत का ध्वज फहराते हैं।
कर नमस्कार में चमत्कार, प्रतिमा प्रभु की प्रगटाते हैं।।
विद्यासागर अकिवाट सिद्ध, पाहन पर दिल्ली जाते हैं।
जिनधर्म जिनागम की ताकत, राजा को सहज दिखाते हैं।।5।।

मुनि मानतुंग ने भूपति को, इक जैनधर्म बतलाया था।
जिनसेन आदि आचार्यों ने, आगम का दीप जलाया था।।
इस युग के शांतिसागर जी, माँ जिनवाणी को छपवायें।
जिन तीर्थ मूर्ति की रक्षा हित, जिन सूत्रों को हम अपनायें।।6।।

ये तीर्थंकर की वाणी है, हर प्राणी का कल्याण करें।
मिथ्यात्व मोह का वमन करें, सम्यक् श्रद्धा का पान करें।।
धर समिति गुप्ति बन महाव्रती, हम यही भावना भायेंगे।
धर 'आस्था' प्रभु की वाणी पे, निश्चय से शिव सुख पायेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकायें।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशकारण भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- सोलहकारण पर्व की, पूजा गुण की खान।
जयमाला की माल वर, बन जायें भगवान।।

(नरेन्द्र छंद)

सोलहकारण श्रेष्ठ भावना, उसको हम भी भायें।
इन्हीं भावना से भवि प्राणी, तीर्थंकर पद पायें।।
इनका चिंतन सुख का कारण, सर्व सुखी बनवायें।
मोक्षमार्ग के अभिनेता बन, शिव सुख मार्ग दिखायें।।1।।

जो-जो भी तीर्थंकर बनते, यही भावना भायें।
ऐसे तीर्थंकर जिनवर को, हम सब शीश झुकायें।।
एक भावना का भी चिंतन, तीर्थंकर पद देता।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मोक्षमार्ग के नेता।।2।।

दर्श विशुद्धि विनय भावना, क्रम-क्रम से हम भायें।
शील व्रतों के अतिचार हर, ज्ञान योग अपनायें।।
धारें उर संवेग भावना, तप वा त्याग बढ़ावें।
करें समाधि सेवा पूजा, राग-द्वेष विनशावें।।3।।

अर्हंतों के गुण कीर्त्तन को, युगों-युगों तक गायें।
आचार्यों की शरणा पाकर, उनके गुण अपनायें।।
बहुश्रुत ज्ञानी पाठक साधु, इनको हम आराधें।
अर्हंतों की वाणी को सुन, क्रोध कषाय विराधें।।4।।

षट् आवश्यक हम नित पालें, सत्पथ को अपनायें।
हो प्रभावना जैनधर्म की, धर्म ध्वजा फहरायें।।

प्रवचनमय वात्सल्य जगाकर, मोक्ष मार्ग प्रगटायें।
एक वर्ष में तीन बार ये, सोलहकारण आये।।5।।

कालभैरवी ने इस व्रत से, तीर्थंकर पद पाया।
सीमंधर तीर्थंकर बनकर, सबको मार्ग दिखाया।।
हम इस व्रत को विधिवत पालें, सर्व सुखों को पायें।
सोलहकारण की जयमाला, 'आस्था' से हम गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य अभयनंदी गुरुदेव का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

अभयदान में दक्ष मुनीश्वर, जीवों के उपकारी।
भक्ति भाव से पूज रहे हैं, जग में सब नर-नारी।।
अभयनंदी आचार्य ऋषि से, अभयदान वर पाते।
नीर गंध मिश्रित करके हम, उनकी भक्ति रचाते।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री अभयनंदी मुनिराज चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(कुसुमलता छंद)

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ से, महावीर का लेते नाम।
शांतिनाथ चिंतामणि बाबा, सब जिनवर को करें प्रणाम।।
जिनवाणी गणधर को ध्याकर, मिलती शांति अपरम्पार।
ज्ञानी मुनिवर अभयनंदि को, करते वंदन बारम्बार।।1।।

महावीर कीर्ति के नंदन, श्री कुंथुसागर गुरुराय।
मम दीक्षादाता गुरुवर को, भक्ति भाव से शीश नवाय।।
शिक्षादाता कनकनंदी और, गुप्तिनंदी गुरुवर गुणखान।
सब गुरुओं के श्रीचरणों में, पाया मैंने आगम ज्ञान।।2।।

इस विधान के प्रेरक निश्चय, मुनि महिमासागर तपवान।
वीर वर्ष पच्चिस सौ सैंतिस, आया मेरा पुण्य महान्।।
नगर बड़ौत शांति जिन सम्मुख, आरंभ भादो कृष्णा तीज।
पूर्ण हुआ कार्तिक कृष्णा को, दशमी तिथि धरम की बीज।।3।।

सोलहकारण का व्रत पालो, मुनि बन पाओ मुक्ति धाम।
सोलहकारण से मिलता है, तीर्थंकर का पद अविराम।।
श्री आचार्य गुप्तिनंदी का, मिला मुझे पावन आशीष।
'आस्था' से इन गुरुजनों को, झुका रही हूँ अपना शीश।।4।।

दोहा– ना बुद्धि ना ज्ञान है, नहीं छंद का ज्ञान।
भक्ति के वश में लिखा, प्रभु का भव्य विधान।।

।। इति अलम्।।

सोलहकारण विधान की आरती

(तर्ज–मेरा मन डोले...)

सोलहकारण, करते पावन, भाये भवि ऋषि मुनिराज रे
हम करें प्रभु की आरतियाँ।

1. जो सोलहकारण को भाते, तीर्थंकर बन जाते।
सोलह स्वप्ने माता देखे, जब प्रभु गर्भ समाते।। जब प्रभु..
सुरपति आते, मंगल गाते, जय जय जय गर्भकल्याण की।
हम करें प्रभु.....

2. जन्मोत्सव की बेला में सब, झूमे–नाचे गायें।
इन्द्र–इन्द्राणी भक्ति करके, अतिशय पुण्य कमायें।। अतिशय...
डमरु बाजे, छम–छम नाचे, जय जन्म त्याग कल्याण की।
हम करें प्रभु.....

3. केवलज्ञानी के चरणों में, घृत के दीप जलायें।
मोह तिमिर को नाशों भगवन्, हम चरणों में आयें।। हम चरणों...
केवलज्ञानी, सबके स्वामी, जय केवलज्ञान कल्याण की।
हम करें प्रभु.....

4. आभा मंडल श्री जिनवर का, सबको पास बुलाता।
शुभ आशीष प्रभु का मिलता, जो नित आरती गाता।। जो नित...
'आस्था' से करें, त्रय गुप्ति वरें, जय जय हो मोक्षकल्याण की।
हम करें प्रभु.....

***

सोलहकारण विधान की आरती

(जय-जय जगदंबे मैय्या..)

जय-जय-जय सोलह कारण, तीर्थंकर पद में कारण।
हम सब उतारें तेरी आरती... हो जिनवर हम सब...

1. सोलहकारण का चिंतन कर, तीर्थंकर बन जायें-2
केवली श्रुतकेवली के पद में, भव्य भावना भायें-2 ऽऽ ओ..
छम-छम-छम घुँघरु बाजे, भक्ति से सुर-नर नाचें..
हम सब उतारें.....

2. दर्श विशुद्धि विनय भावना, आदि जो भी भाये-2
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ वो, तीर्थंकर पद पाये-2 ऽऽ ओ..
महिमा हम इसकी जाने, कीर्ति प्रभुवर की गाने..
हम सब उतारें.....

3. स्वर्ण रजत नाना रत्नों के, दीप जलाकर लायें-2
सोलहकारण के विधान की, आरती करने आयें-2 ऽऽ ओ..
भक्ति के भाव बनाये, 'आस्था' प्रभु के गुण गाये..
हम सब उतारें.....

***

सोलहकारण का चालीसा

दोहा- पाँचों परमेष्ठी प्रभु, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर विभु, देना सम्यक्ज्ञान।।
सोलहकारण पर्व का, चालीसा सुखकार।
चालीसा इसका पढ़े, नमन करें शतबार।।

(चौपाई)

सोलह कारण मंगलकारी, परम विशुद्ध जगत् उपकारी।
जो भाये भविजन संसारी, बनते तीर्थंकर अविकारी।।1।।
केवली श्रुतकेवली के द्वारे, मोह-तिमिर मिथ्यात्व प्रहारें।
द्वादश अंग पूर्ण के पाठी, शीश लगायें इनकी माटी।।2।।
सम्यक् दर्शन दीप जलाते, तीर्थंकर प्रकृति को पाते।
उत्तम साधक सिद्धी पाने, निज आतम को सिद्ध बनाने।।3।।
करुणा सागर करुणा धारें, प्राणी मात्र का भला विचारें।
सबका ही कल्याण करूँगा, सबको भव से पार करूँगा।।4।।
ऐसा वत्सल जिनके होता, वो प्राणी तीर्थंकर होता।
यही भावना मुनिवर भाते, करें समाधि सुर तन पाते।।5।।
दर्श विशुद्धि मन की शुद्धी, विनय भावना देती बुद्धी।
शील भावना शील बढ़ावे, अभीक्ष्ण ज्ञान सुदीप जलावे।।6।।
श्री संवेग वेग विनशावे, त्याग भावना त्याग जगावे।
तप में तपती कंचन काया, साधु समाधि भाने आया।।7।।
वैयावृत्ति करें सदा ही, अरिहंतों को भजें सदा ही।
श्री आचार्य गुरुवर तारें, पाठक ज्ञानी चाँद सितारें।।8।।
प्रवचन है अर्हत् की वाणी, सुनते प्राणी बनते ज्ञानी।
षट् आवश्यक जो नित पाले, खोले वो शिवपट के ताले।।9।।
मार्ग प्रभावना धर्म बढ़ाती, भव्यों को सन्मार्ग दिखाती।
प्रवचन वात्सल्य प्रेम बढ़ाता, शत्रु को भी मित्र बनाता।।10।।

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति संहिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्टी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनककनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनककनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)